हिलाया था फ़लक को इंक़ेलाब अंगेज़ नारों से
किया था जंग-ए-आज़ादी में ये भी काम उर्दू ने

''आज़ादी का अमृत्व महोत्सव''

75 वें स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर

उर्दू विभाग
हमीदिया गर्ल्स पी० जी० कालेज, प्रयागराज द्वारा

तहरीक-ए-आज़ादी

(स्वतंत्रता आन्दोलन) उर्दू शायरी के आईने में

(संक्षिप्त अवलोकन)

प्रस्तुतीकरण

श्रमती नाशेहा उस्मानी
डा० (श्रमती) ज़रीना बेगम
एसोसिएट प्रोफेसर

उर्दू विभाग
हमीदिया गर्ल्स पी० जी० कालेज, प्रयागराज

अनुक्रमणिका

क्र0 स0	नाम	शीर्षक	पृष्ठ सं0
1.	संक्षिप्त अवलोकन	डा0 ज़रीना बेगम	4
2.	ख़वाजा अल्ताफ़ हुसैन 'ह़ाली'	(1) मरसिया देहली –ए– मरहूम	8
		(2) हुब्बे–ए–वतन	9
3.	हसरत मोहानी	(3)कुछ इंक़ेलाबी व एह़तेजाजी....	11
4.	आनन्द नारायण मुल्ला	(4) आ ही गया	13
		(5) लहू का टीका	14
		(6) ज़मीन–ए–वतन	15
5.	पंडित बृज नारायण चकबस्त	(7) गोपाल कृष्ण गोखले	16
		(8) ख़ाक –ए– हिन्द	18
6.	तिलोकचन्द महरुम	(9) जय हिन्द	19
		(10) पयामे सुलह	20
7.	इक़बाल अहमद सुहेल	(11) मुबारकबाद आज़ादी	21
8.	सिकन्दर अली वज्द	(12) आफ़्ताबे–ताज़ा	22
		(13) बशारत	23
9.	महाराज बहादुर बर्क देहलवी	(14) अहल–ए–हिन्द	24
10.	दुर्गा सहाय सुरूर जहांनाबादी	(15) गुल्ज़ार–ए–वतन	25
11.	अकबर इलाहाबादी	(16) जल्वा–ए–दरबार–ए–देहली	26
		(17) कोराना अंग्रेज़ परस्ती	27
		(18) वतन का राग	28
12.	डाक्टर सर मुहम्मद इक़बाल	(19) तरान–ए–हिन्दी	29
		(20) शोआ–ए–उम्मीद	30
		(21) नया शिवाला	31
13.	शब्बीर ह़सन ख़ान ''जोश मलीहाबादी''	(22) शिकस्ते ज़िन्दाँ का ख्वाब	32
		(23) वतन	33
14.	असरारुल ह़क़ मजाज़	(24) जश्ने – आज़ादी	34

	(25) इंक़लाब	36
	(26) आवारा	38
	(27) बोल! अरी ओ धरती बोल!	39
15. फैज़ अहमद फ़ैज़	(28) सुब्ह –ए– आज़ादी	41
	(29) हम जो तारीक राहों में मारे गये	42
16. अख़्तरुल ईमान	(30) एक सवाल	43
17. मख़दूम मोही उद्दीन	(31) जंग –ए– आज़ादी	44
18. गुलाम रब्बानी ताबाँ	(32) इन्तेक़ाम	45
19. अली सरदार जाफ़री	(33) एशिया जाग उठा	46
	(34) इरतेक़ा और इंक़ेलाब	47
	(35) यह हिन्दोस्ताँ	48
20. क़ाज़ी सलीम	(36) मेरे आज़ाद वतन	49
21. शमीम किर्हानी	(37) दौलते–सीमीं	50
	(38) जवान जज़्बे	51
	(39) रौशन अंधेरा	52
22. सिराज लखनवी	(40) यौमे –ए– आज़ादी	53
23. जाँनिसार अख्तर	(41) बादा –ए– वतन	54
24. निहाल सेवहारवी	(42) वतन	55
25. गोपाल मित्तल	(43) ऐ वतन	55
26. अहमद नदीम क़ासमी	(44) समुद्र पार के फ़रिश्ता हाय....	56
27. मोईन एहसन जज़्बी	(45) नया सूरज	57
28. साहिर लुधियानवी	(46) ऐ शरीफ़ इंसानों	58
29. आनंद नरायण मुल्ला	(47) नग़्म–ए–वतन	59
30. साग़र निज़ामी	(48) तरान–ए–आज़ादी	60
31. नाज़िश प्रतापगढ़ी	(49) नया साज़ नया अंदाज़	61
32. अल्लामा तैश सिद्दीक़ी	(50) हदीस–ए–वतन	62

4

संक्षिप्त अवलोकन

हर भाषा का साहित्य कहीं न कहीं अपनी समकालीन समस्याओं राष्ट्रों के एतिहासिक, आर्थिक या सांस्कृतिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है क्योंकि कोई भी लेखक अथवा कवि अपने निजी जीवन में चाहे कैसा भी रहा हो किन्तु जब वह कला की दुनिया में क़दम रखता है तो वह सत्य को ही प्रस्तुत करने का प्रयास करता है और जिस देश में विभिन्न प्रकार के आंदोलनों की चर्चा रही हो भला एक कवि उससे कैसे अप्रभावित रह सकता है। ऐसे में वह देश भक्ति, सामाजिक समस्याओं, विकास, युद्ध और शांति, रंग–ओ–नस्ल, गुलामी जैसी मुद्दों से लड़ता, जूझता दिखाई देता है जो स्वभाविक है और वह अत्याचार के विरुद्ध बोलने पर विवश हो जाता है।

यदि इस दृस्टिकोण से पूरे उर्दू साहित्य का विश्लेषण करें तो हमें साहित्य के सिपाहियों की ऐसी विस्तृत सूची मिलेगी जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी कविताओं के माध्यम से लोगों को जागृत करने और दुश्मन को चुनौती देने में महत्वपुर्ण भूमिका निभाई। देशभक्ति में विलीन, देश की दयनीय दशा, जनता की दुर्दशा, पूँजीपतियों की बर्बरता, अंग्रेज़ों व साहूकारों के जुल्म व भ्रष्टाचार, दरबारों की साज़िश जैसे विषयों पर भिन्न– भिन्न विधाओं (ग़ज़ल, नज़्म, शहर आशोब इत्यादि) में अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त किया कभी सुधार लाने तो कभी क्रंतिकारी रुप में और कभी हास्यव्यंग तो कहीं देश प्रेम से ओत प्रोत और कभी ज़्यादतियों का विरोध करते दिल छू लेने वाले कलाम ने लोगों में हलचल पैदा कर दिया और स्वतंत्रता संग्राम का ऐसा बिगुल बजाया कि अंततः

अंग्रेज़ों को भारत छोड़ने पर विवश होना पड़ा।

19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मध्यमवर्ग में काफ़ी जागृति आ चुकी थी, विदेशी शक्तियों के विरुद्ध भी भावनाऐं उत्पन्न हो रही थीं, देश की बिखरती स्थिति से हर वर्ग तिलमिला उठा और अंग्रेज़ों को भारत से बाहर निकालने के लिए 1857 ई0 में जिस संगठित रुप में संधर्ष को तत्पर हुआ उमें साहित्यकारों का भी वर्ग सम्मिलित था। उर्दू साहित्य के कवियों ने भी इस मुहिम में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक ऐसी मोहिम चलाई जिसने लोगों को एकजुट होने में अहम भूमिका निभायी। किन्तु 1857 ई0 की विफलता के बाद 20 वीं शताब्दी के आरम्भ में कुछ आन्दोलन इस प्रकार उभरे जैसे स्वदेशी आन्दोलन, 1914 ई0 का विश्वयुद्ध, 1930 का दिल्लीदरबार, प्रिंस आफ वेल्स का आगमन, मुस्लिम लीग का गठन, कांग्रेस विभाजन, कानपुर, मछली बाज़ार मस्जिद की त्रासदी और प्रथम विश्वयुद्ध का प्रकोप इत्यादि माहौल ने सहित्यकारों को विशेषतः कवियों को अत्यधिक प्रभावित किया कवियों ने न सिर्फ भावनाएं व्यक्त की बल्कि राजनीतिक चेतना को भी बढ़ावा दिया। लोगों को धार्मिक गिरोह बंदी, दंगे, फसाद के ज़हर से मुक्त रहते हुए देशप्रेम को बढ़ावा देने के लिए उन्मुख किया। किसी भी प्रकार की भेदभावपूर्ण भावना, बर्बरता का विरोध करने, निर्भय होकर देशवासियों को शत्रुओं से टकराने का ऐलान किया। अर्थात स्वतंत्रता आन्दोलन का पूरा दौर जो राजनीतिक, सामाजिक उथल पुथल का शिकार रहा उसे कवियों ने अपनी कविताओं में भरपूर तरीक़े से अभिव्यक्त किया।

उपरोक्त विषय के सम्बन्ध में मैं यह विशेष तौर पर कहना चाहूँगी कि मैंने यहाँ जिन कविताओं का चयन किया है वह हमारे देश और देशभक्ति के महत्व व महानता को उजागर करती हैं कहीं इंकेलाब (क्रान्ति) ओ एहतेजाज (विरोध) के रुप में तो कहीं देश प्रेम की अभिव्यक्ति जो कवि के दिल में स्वतंत्रता की आशा बन कर उसे हरपल प्रेरित करती दिखाई

देती है ये वह भावनाऐं थीं जो कवियों के मन मस्तिष्क में आज़ाद भारत की कल्पना को साकार करने का संकल्प बन कर उभरी लेकिन जब भारत आज़ाद हो गया तो कुछ कवियों ने उन विचारों को भी कविता का रुप दिया जिससे लगता है कि उन्होंने ऐसे स्वतंत्र भारत की कल्पना नहीं की थी उनके सपने तो अधूरे रह गए, यह अधूरी आज़ादी उन्हें नहीं चाहिए थी। जो भी हो ये कविताऐं इस बात का सपष्ट प्रमाण हैं कि भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन आम भारतीय सभ्यता भारतीय महानता और देश भक्ति, आपसी भाई चारा की भावनाऐं उर्दू शायरी का एक खास हिस्सा बन गई जिस से उर्दू के कवियों ने अपनी कविताओं अथवा शायरी की भिन्न–भिन्न विधाओं में प्रस्तुत करने में स्वयं को बाध्य पाया और उसे व्यक्त करना बंद नहीं किया। पूरी उर्दू शायरी के गहन अध्ययन से पता चलता है कि उर्दू ने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में एक कर्मठ सिपाही की भूमिका निभाई है। जब जब भारतियों को लाठियों से पीटा गया, साम्रराज्य वादी घोड़ों की टापों ने शोर मचाया तो कवियो ने ललकारते हुए कहाः

सर बरीदा तन शिकस्ता हडिडयां लाशों के ढ़ेर
बाग़ियों को तख़्त –ए– शाही पर बिठा कर लेंगे दम

यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि विदेशी सरकार की नींव हिलाने वाले स्वतंत्रता सेनानियों की भाषा उर्दू थी जिसने देशप्रेम और क्रान्ति की भावना को मज़बूत किया और स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी देश भक्ति, क्रान्ति और विरोध पूर्ण भावों से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और देश के रचनात्मक प्रक्रिया की कल्पना करते हुए अराजक वातावरण में राजनीतिक उत्पीड़न अन्याय, भ्रष्टाचार, एवं जुल्म के धोर अंधकार में अपना संदेश आम जनता और अन्यायइयों तक पहुँचाने से पीछे नहीं हटे, जिसका विश्लेषण बहुत विस्तृत है लेकिन यहाँ केवल चुनिन्दा कविताओं को ही हिंदी लिपि में प्रस्तुत करने का छोटा सा हमारा प्रयास है। हमारा उद्देश्य उन प्रतिष्ठित

कवियों को श्रद्धान्जलि देना है ताकि उनकी कविताएं संदेश स्वरुप आने वाली पीढ़ियों तक पहुँच सके। उसके लिए आवश्यक है कि हम ऐसी धरोहर को हर भाषा में संरक्षित करें।

मैं इस विश्रलपेण में हुई त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। प्रस्तुत हैं वह कविताऐं और कठिन शब्दों के अर्थ जिसने भारतीय स्वंतत्रता आन्दोलन के समय सोये हुए लोगों को जागरुक करने में अपना सराहनीय सहयोग दिया। अंत में अल्लामा रज़ी बदायूँनी की कविता 'उर्दू ज़बान–ए–इंक़ेलाब' की चंद लाइनें अवश्य साझा करना चाहूँगी।

हिमालय पर लिखा है हुर्रियत का नाम उर्दू ने
किया है जंग–ए–आज़ादी में ऐसा काम उर्दू ने
तआवुन क़ौम को देकर प–ऐ–आज़ादी–ए–कामिल
किया ऐवान–ए–बातिल में बपा कुहराम उर्दू ने
सबक़ उसने पढ़ाया है अहिंसा का उखुव्वत का
पयाम–ए–गाँधी–ओ–नहरु किया है आम उर्दू ने
हिलाया था फ़लक को इंक़ेलाब अंगेज़ नारों से
किया था जंग–ए–आज़ादी में ये भी काम उर्दू ने
वह अटठारह सौ सत्तावन में जिसकी इबतेदा की थी
दिखाया है उसी आग़ाज़ का अंजाम उर्दू ने

सधन्यवाद

डा0 ज़रीना बेगम
एसोसिएट प्रोफेसर
उर्दू विभाग हमीदिया गर्ल्स डिग्री कालेज,
प्रयागराज

दिनाकः 8 अगस्त 2021

8

मरसिया देहली –ए– मरहूम

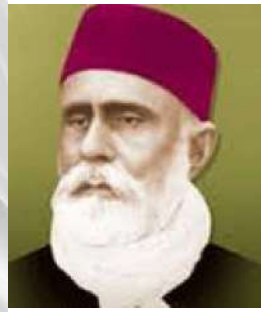

जन्म – 1837 ई0
मृत्यु – 1914 ई0

ख़वाजा अल्ताफ़ हुसैन 'ह़ाली'

तज़किरा[1] देहली –ए– मरहूम का ऐदोस्त न छेड़
न सुना जाएगा हमसे ये फ़साना[2] हरगिज़
दास्ताँ गुल की ख़िज़ाँ में न सुना ऐ बुलबुल
हंसते हंसते हमें ज़ालिम न रुलाना हरगिज़
ढूँढ़ता है दिल –ए– शोरीदा[3] बहाने मुतरिब[4]
दर्द अंगेज़ ग़ज़ल कोई न गाना हरगिज़
नहीं अगली सी मुसव्विर[5] हमें याद आयेंगी
कोई दिलचस्प मुरक़्क़ा[6] न दिखाना हरगिज़
ले के दाग़ आयेगी सीने पे बहुत ऐ सय्याह
देख इस शहर के खंडहरों में न जाना हरगिज़[7]
चप्पा चम्पा पे हैं याँ गौहर –ए– यकता[8] तहे ख़ाक[9]
दफ़न होगा न कहीं इतना ख़ज़ाना हरगिज़
मिट गये तेरे मिटाने के निशाँ भी अब तो
ऐ फ़लक इस से ज़्यादा न मिटाना हरगिज़
बख़्त[10] सोये हैं बहुत जाग के ऐ दौर–ए–जमाँ[11]
न अभी नींद के मातों को जगाना हरगिज़
कभी ऐ इल्म –ओ– हुनर घर था तुम्हारा दिल्ली
हमको भूले हो तो घर भूल न जाना हरगिज़
गालिब–ओ–शेफ़्ता–ओ–नय्यर–ओ–आज़ुरदा–ओ–ज़ौक़[12]
अब दिखायेगा न शक्लों को ज़माना हरगिज़
रात आख़िर हुई और बज़्म हुई ज़ेर –ओ– ज़बर[13]
अब न देखोगे कभी लुत्फ़[14] शबाना[15] हरगिज़
बज़्म –ए– मातम तो नहीं बज़्म –ए– सोख़न है 'हाली'
याँ मुनासिब नहीं रो–रो के रूलाना हरगिज़

1– चर्चा 2– कहानी 3– परेशान दिल 4– गाने वाला, क़व्वाल 5– तस्वीर बनाने वाला 6– अलबम 7– बिल्कुल नहीं, कभी नहीं 8– अनमोल मोती 9– ज़मीन के नीचे 10– किस्मत 11– वर्तमान युग 12– सब शायरों के नाम है 13– ऊँच नींच, उथल पुधल 14– मज़ा 15– रात

9

हुब्बे –ए– वतन

ख़वाजा अल्ताफ़ हुसैन 'ह़ाली'

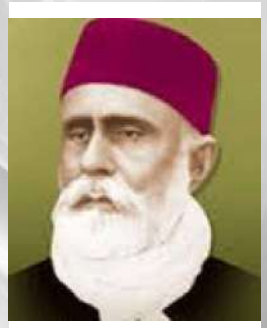

जन्म – 1837 ई0
मृत्यु – 1914 ई0

ऐ सिपहर –ए– बरीं[1] के सय्यारों[2]
ऐ फ़ज़ा –ए– ज़मी के गुलज़ारों
ऐ पहाड़ो की दिल फरेब फ़जा
ऐ लबे जू[3] की ठंडी ठंडी हवा
ऐ अनादिल[4] के नग़मा –ए– सहरी
ऐ शब –ए– माहताब[5] तारों भरी
ऐ नसीम –ए– बहार के झोंको
दहर –ए– ना पाएदार के झोंकों
तुम मेरी दिल लगी के सामाँ थे
तुम मेरे दर्द –ए– दिल के दरमाँ थे
ऐ वतन ऐ मेरे बहिश्त –ए– बरीं
क्या हुये तेरे आसमान –ओ– ज़मीं
रात और दिन का वो समाँ न रहा
वो ज़मीं और वो आसमाँ न रहा
तेरी दूरी है मोरिद –ए– आलाम[6]
तेरे छुटने से छुट गया आराम
काट खाता है बाग़ बिन तेरे
गुल है नज़रों मे दाग़ बिन तेरे
मिट गया नक़्श[7] कामरानी[8] का
तुझ से था लुत्फ़[9] ज़िन्दगानी का

सच बता तू सभी को भाता है
या कि मुझ से ही तेरा नाता है
मैं ही करता हूँ तुझपे जान निसार
या कि दुनिया है तेरी आशिक़–ए–ज़ार
सब को मीठी निगाह से देखो
समझो आँखो की पुतलियाँ सब को
मुल्क है इत्तेफ़ाक़[12] से आज़ाद
शहर है इत्तेफ़ाक़ से आबाद
इज़्ज़त –ए– क़ौम चाहते हो अगर
जा के फैलाओ उन में इल्म–ओ हुनर
न रहेंगे सदा यही दिन रात
याद रखना हमारी आज की बात

1– नवाँ आकाश 2–सितारे 3–नहर किनारे 4– बुलबुलें 5– चाँद 6– दुनिया का गुनहगार 7– निशान 8– कामयाबी 9– मज़ा 10– कुर्बान 11– सच्चा प्रेमी, प्रेम में तबाह हाल 12– एक मत

कुछ इंक़ेलाबी व एह़तेजाजी अशआर

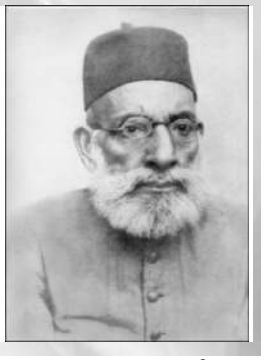

जन्म – 1875 ई0
मृत्यु – 1951 ई0

हसरत मोहानी

(1)

रूह आज़ाद है ख़याल आज़ाद
जिस्म 'हसरत' की क़ैद है बेकार

(2)

अच्छा है अहल–ए–ज़ोर[1] किये जाएं सख़्तियाँ
फैलेगी यूँ ही शोरिश[2]–ए–हुब्ब–ए–वतन तमाम

(3)

खुशी से ख़त्म कर ले सख़्तियाँ क़ैद–ए–फिरंग[3] अपनी
कि हम आज़ाद हैं बेगाना–ए–रंज–ए–दिल आज़ारी[4]

(4)

कुछ शक नहीं इसमें कि वतन की है तरक़्क़ी
हम रिश्तगी–ए–सुब्हे5 जुन्नार[6] पे मौक़ूफ़[7]

(5)

मिट चलें यूँ ही ना क्यों दैर[8]–ओ–हरम[9] के झगड़े
एक रिश्ता भी तो है सुब्बहो जुन्नार के बीच

(6)

कल के मक़बूल[10] आज है मरदूद
आह इस दौर–ए–इंकेलाब के रंग

(7)

समझते हैं सब अहल–ए–मग़रिब[11] की चालें
मगर फिर भी बैठे हैं बेकार हो कर

(8)

मैं मुब्तला–ए–रंज–ए–वतन हूँ वतन से दूर
बुलबुल के दिल में यादे चमन है चमन से दूर

(9)

इक नजात[12]–ए–हिन्द की दिल से है तुझको आरजू
हिम्मते सर बुलन्द से पास का इन्सेदाद[13] कर

(10)

क्या हुई आसानियां वह रोज़गार–ए–वस्ल की
अब तो हम हैं और रंज–ए–बेशुमार इंतेज़ार

(11)

हुर्रियत–ए–कामिल[14] की क़सम खा के उठे हैं
अब साया–ए–ब्रिटिश की तरफ जाएंगे क्या हम

(12)

दश्मन के मिटाने से मिटा हूँ न मिटूँगा
और यूँ तो मैं फानी[15] हूँ फना मेरे लिए है

रस्म–ए–जफा[16] कामयाब देखिये कब तक रहे
हुब्ब–ए–वतन मस्त ख़्वाब देखिये कब तक रहे

दिल पे रहा मुद्दतों ग़लबा[17]–ए–यास[18]–ओ–हरास[19]
कब्ज़ा–ए–हज़्म[20]–ओ–हिजाब[21] देखिये कब तक रहे

दौलत–ए–हिन्दोस्ताँ कब्ज़ा–ए–अग़ियार[22] में
बे अदद बे हिसाब देखिये कब तक रहे

है तो कुछ उखड़ा हुआ बज़्म–ए–हरीफाँ[23] का रंग
अब ये शराब–ओ–कबाब देखिये कब तक रहे

ता बा कुजा हूँ[24] दराज़[25] सिलसिला हाय फरेब
ज़ब्त26 की लोगों में ताब देखिये कब तक रहे

1.जुल्म करने वाला 2.चीख़ पुकार , शोर 3.अंग्रेज़ों की क़ैद 4.सितम, जुल्म 5.तस्बीह 6.जनेऊ 7.समाप्त 8. मन्दिर 9.इस्लामिक केंद्र, काबा 10.माना हुआ, सम्मानित, प्रसिद्ध 11.अग्रेज़ लोग, पश्चिमी 12. छुटकारा, रिहाई 13.रोकथाम करना 14. पूरी तरह आज़ाद होना 15. मिटने वाला 16.जुल्म का तरीका 17. छा जाना, हावी होना 18. ना उम्मीद होना 19. गिरफ्तार 20. होशियार 21. परदा 22. ग़ैर, अजनबी मुराद दुश्मन 23.दुश्मन 24.कभी 25.लम्बा 26.बर्दाश्त, रोक

नोटः 9 नम्बर गज़ल हुकूमत ने ज़ब्त कर ली थी जिसका रिकॉर्ड ''ज़ब्त शुदा अदबियात'' नेशनल आर्काईव में मौजूद है। नामांकन संख्या 1712 है)

13

आ ही गया

जन्म – 1901 ई0
मृत्यु – 1997 ई0

आनन्द नारायण मुल्ला

हुक्मे – माज़ूली[1] बनामे – तीरगी[2] आ ही गया
वादिए – शब[3] में पयाम–ए–रौशनी[4] आ ही गया

चीरता ज़ुल्मत[5] को तह दर तह सहाब अन्दर सहाब[6]
फिर उफक[7] पर आफ्ताबे–ज़िन्दगी[8] आ ही गया

अंजुमन मे तिश्नाकामों[9] की बसद–मीना–ओ–जाम[10]
आज साक़ी लेके इज़्ने – मैकशी[11] आ ही गया

तीशा–ए–फरहाद[12] बहरे कस्रे ख़ुसरो[13] ताव के
कोहकन[14] की ज़द मे कस्रे–ख़ुसरवी[15] आ ही गया

1– पद से हटाने का हुक्म 2– अन्धकार के नाम 3– रात की वादी 4– प्रकाश का सन्देश 5– अन्धकार 6– बादल 7– क्षितिज 8– जीवन का सूर्य 9– प्यासा 10– सुराही और प्याला 11– मदिरा, पान का निमनत्रण 12– फरहाद की कुदाल 13– खुसरो के महल के लिए 14– पहाड़ काटने वाला, फरहाद 15– खुसरो का महल

लहू का टीका

जन्म – 1901 ई0
मृत्यु – 1997 ई0

आनन्द नारायण मुल्ला

वतन फिर तुझको पैमान[1] –ए– वफ़ा देने का वक्त आया
तेरे नामूस[2] पर सब कुछ लुटा देने का वक़्त आया

वह खित्ता[3] देवताओं की जहाँ आरामगाहें थीं
जहाँ बेदाग़ नक़्श –ए– पाऐ इंसानी से राहें थीं
जहाँ दुनिया की चीखें थीं न आंसू थे ना आहें थीं
उसी को जंग का मैदां बना देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमान –ए– वफ़ा देने का वक़्त आया

रुपहली बर्फ पर है सुर्ख ख़ूँ की आज एक धारी
सहर की नर्म किरनों ने यहाँ दोशीज़गी खोई
हुई आलूदा यह मासूम दुनिया अप्सराओं की
अब इन नापाक धब्बों को मिटा देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमान–ए–वफ़ा देने का वक़्त आया

हर इक आंसू का शोला जज़्ब करके दिल के खिर्मन[5] में
हर इक फरियाद की लै ढाल कर इक अज़्मे– आहन[6] में
हर इक नारे की बिजली करके आसूदा नशेमन[7] में
फिर इस बिजली को दुशमन पर गिरा देने का वक़्त आया
वतन फिर तुझको पैमान–ए–वफ़ा देने का वक़्त आया

1– वफ़ा का वचन 2– इज़्ज़त 3– धरती का टुकड़ा 4– कुँवारापन 5– खलियान 6– घोंसला

15

''ज़मीन–ए–वतन''

जन्म – 1901 ई0
मृत्यु – 1997 ई0

आनंद नरायण मुल्ला

ज़मीन –ए– वतन ऐ ज़मीन –ए– वतन
अज़ल[1] में जहाँ सब से पहले हयात[2]
लिये अपनी आग़ोश[3] में कायनात[4]
जलाती हुई शम्म–ए–ज़ात –ओ– सिफात[5]
हेजाब[6] –ए– अदम[7] से हुई जल्वा ज़न[8]
ज़मीन –ए– वतन ऐ ज़मीन –ए– वतन
जहाँ बिस्तर –ए– बर्फ से मस्त –ए– ख़्वाब
उठा आँख मलता हुआ आफताब[9]
लुटाती हुई जल्वा –ए– बे नक़ाब
जहाँ आई पहली सुनहरी किरन
ज़मीन –ए– वतन ऐ ज़मीन –ए– वतन
जहाँ पहले तख़्लीक़[10] –ए– इन्साँ हुई
तेरी रहमत उसकी निगेहबाँ[11] हुई
ख़िरद[12] उसकी गहवार –ए– जुन्बाँ[13] हुई
बशर ने तमद्दुन के सीखे चलन
ज़मीन –ए– वतन ऐ ज़मीन –ए– वतन
उख़ूवत[14] का फिर हाथ में जाम ले
मसावात –ए– इंसाँ का फिर नाम ले
ख़यालात[15] –ए– माज़ी[16] से फिर काम ले
वतन को बना दर हक़ीक़त वतन
ज़मीन –ए– वतन ऐ ज़मीन –ए– वतन

1– प्रारम्भ 2–जीवन 3–गोद 4– दुनिया 5– योग्यता, ख़ूबी 6– परदा 7– ना मैजूदगी, मिटना 8– दिखाई देना 9– सूरज 10– पैदा होना, बनाना 11– देखभाल करना, सुरक्षा करना 12– अक़्ल 13–झूला, हिलने वाला 14– भाईचारा 15– समानता 16– गुज़रा, समय, भूतकाल

गोपाल कृष्ण गोखले

पंडित बृज नारायण चकबस्त

जन्म – 1882 ई0
मृत्यु – 1926 ई0

लरज़[1] रहा था वतन जिस ख़याल के डर से
व आज ख़ून रुलाता है दीदा–ए–तर[2] से
सदा[3] ये आती है फल फूल और पत्थर से
ज़मीं पे ताज गिरा क़ौम–ए–हिन्द के सर से
हबीब[4] क़ौम का दुनिया से यूँ रवाना हुआ
ज़मीं उलट गई क्या मुंक़लिब[5] ज़माना हुआ

बढ़ी हुई थी नहूसत ज़वाल[6] –ए– पैहम[7] की
तेरे ज़हूर से तक़दीर क़ौम की चमकी
निगाहे –ए– यास[8] थी हिंदूस्ताँ पे आलम[9] की
अजीब शय थी मगर रौशनी तेरे दम की
तुझी को मुल्क में रौशन दिमाग़ समझे थे
तुझे ग़रीब के घर का चराग़ समझे थे

वतन को तूने साँवारा किस आब–ओ–ताब के साथ
सहर का नूर बढ़े जैसे आफ़ताब[10] के साथ
चुने रिफ़ाह[11] के गुल हुस्न –ए– इंतिख़ाब के साथ
शबाब क़ौम का चमका तेरे शबाब के साथ
जो आज नश–ओ– नुमा[12] का नया ज़माना है
ये इंक़लाब तेरी उम्र का फ़साना[13] है

1– काँपना 2– आँख 3–आवाज़ 4– दोस्त 5– उलट जाना 6– पतन 7–लगातार 8– ना उम्मीदी 9– दुनिया 10 – सूरज 11–सुख, सहूलत 12–तरक़्की आगे बढ़ना 13– कहानी

वतन की जान पे क्या–क्या तबाहियाँ आईं
उमँड उमँड के जहालत की बदलियाँ आईं
चराग़ –ए– अम्न[14] बुझाने को आँधियाँ आईं
दिलों में आग लगाने को बिजलियाँ आईं
इस इंतिशार[15] में जिस नूर का सहारा था
उफुक[16] पे क़ौम के वह एक ही सितारा था
रहेगा रंज ज़माने में यादगार तेरा
वह कौन दिल है कि जिस में नहीं मज़ार तेरा
जो कल रक़ीब[17] था है आज सोगवार[18] तेरा
ख़ुदा के सामने है मुल्क शर्मसार[19] तेरा
पली है क़ौम तेरे साया –ए–करम के तले
हमें नसीब थी जन्नत तेरे कदम के तले

14–शांति 15– बिखराव, उथल, पुथल, हलचल 16–जहाँ असामन का किनारा जमीन से मिला दिखाई देता है 17– दुश्मन 18 – उदास 19–शर्मिन्दा

ख़ाक –ए– हिन्द

जन्म – 1882 ई0
मृत्यु – 1926 ई0

पंडित ब्रज नारायन चकबस्त

ऐ ख़ाक[1] –ए– हिन्द तेरी अज़मत[2] में क्या गुमां है
दरिया –ए– फैज़ –ए– कुदरत[3] तेरे लिए रवां है
तेरी जबीं से नूर –ए– हुस्न –ए– अज़ल[4] अयां है
अल्लाह रे ज़ेब–ओ–ज़ीनत[5] क्या औज–ए–इज़्ज़ो शां है

हर सुब्ह है ये ख़िदमत खुर्शीद[6] पुरज़िया[7] की
किरनों से गूंधता है चोटी हिमालया की

गौतम ने आबरु दी इस माबद[8] –ए– कुहन[9] को
'सरमद' ने इस ज़मी पर सदक़े किया वतन को
'अकबर' ने जाम–ए–उल्फत बख़्शा इस अंजुमन[10] को
सींचा लहू से अपने 'राणा' ने इस चमन को

सब शूरवीर अपने इस ख़ाक में निहां[11] हैं
टूटे हुए खण्डर हैं या उनकी हड्डि़याँ हैं

है जूए शीर हमको नूरे सहर[12] वतन का
आँखों में रौशनी है जलवा इस अंजुमन का
है रश्क महर[13] ज़र्रा इस मंज़िल –ए– कुहन का
तुलता है बर्ग –ए– गुल से कांटा भी इस चमन का

गर्द –ओ– गुबार यां का ख़िलअत[14] है अपने तन की
मर कर भी चाहते हैं ख़ाक –ए– वतन कफ़न की

1– मिट्टी, 2– बड़ाई 3–कुदरत के फ़ायदे 4– प्रारम्भ, शुरुआत, 5–सजावट,सुन्दरता 6– सूरज 7– रौशनी 8– प्रार्थना घर 9–पुराना 10– महफ़िल 11– छुपा 12– सुबह 13–सूरज , 14– वह कपड़ा जो इनाम में बादशाह की तरफ से मिले, क़ीमती कपड़ा

19

जय हिन्द

तिलोकचन्द महरुम

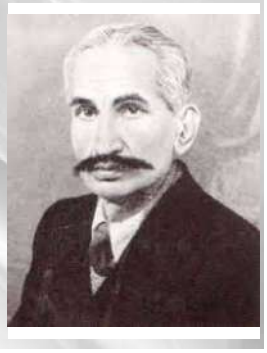

जन्म – 1887 ई0
मृत्यु – 1966 ई0

पैदा उफक–ए–हिन्द[1] से है सुबह के आसार
है मंज़िले आखिर में गुलामी की शबे–तार[2]
आमद सहरे– नौ[3] की मुबारक हो वतन को
पामाल–ए–महन[4] को
मशरिक़ मे ज़ियारेज़[5] हुआ सुबह का तारा
फ़र्खन्दा–ओ–ताबिन्दा–ओ–जाँबख़्श–ओ– दिलआरा[6]
रौशन हुए जाते हैं दरो–बाम वतन के
ज़िन्दान–ए–कुहन के
'जयहिन्द' के नारों से फ़ज़ा गूँज रही है
जयहिन्द की आलम में सदा गूँज रही है
यह वलवला यह जोश यह तूफ़ान मुबारक
हर आन मुबारक
अहले–वतन आपस में उलझने का नहीं वक़्त
ऐसा न हो ग़फ़लत में गुज़र जाये कहीं वक़्त
लाज़िम[8] है कि मंज़िल के निशां पर हो निगाहें
पुरपेच[9] हैं राहें

1– हिन्द का क्षितिज 2– अन्धेरी रात 3– नयी सुबह का आगमन 4– दुःख से कुचला 5– रौशनी फैलाने वाला 6– प्राणदायक, आकर्षक और खुश 7– पुराना जेलख़ाना 8– अनिवार्य 9– उलझावदार

पयाम–ए–सुलह[1]

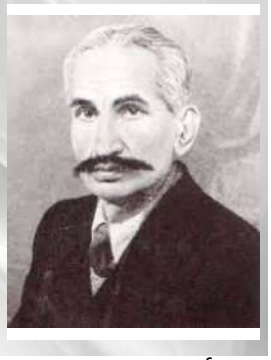

जन्म – 1887 ई0
मृत्यु – 1966 ई0

तिलोकचन्द महरुम

लाई पैगाम मौजे–बादे– बहार[2]
कि हुई खत्म शोरिशे – कश्मीर[3]
दिल हुए शाद अम्न कोशों के
है यह गांधी के ख्वाब की ताबीर
सुलहजोई[4] में अम्नकोशी[5] में
काश होती न इस कदर ताख़ीर[6]
ताकि होता न इस इस क़दर नुक्सां
और होती न दहर[7] में तश्हीर[8]
बच गये होते नौजवां कितने
जिनको मरवा दिया बसर्फे– कसीर[9]
ज़िक्र क्या उसका, जो हुआ सो हुआ
उन बेचारों की थी यही तक़दीर
काम लें अब ज़रा तह़म्मुल[10] से
दोनो मुल्कों के साहबे– तदबीर[11]

1– शांति का संदेश 2– बहार की हवा 3– कश्मीर की बग़ावत 4– शांतिपूर्वक रहना 5– शांति की कोशिश 6– देर 7– दुनिया 8– शोहरत, प्रसिद्ध 9– अधिक 10– धैर्य, शान्ति 11– समझदार लोग

मुबारकबाद आज़ादी

जन्म – 1884 ई0
मृत्यु – 1955 ई0

इक़बाल अहमद सुहेल

गुलज़ारे–वतन की कोई देखे तो फबन[1] आज
सरशार[2] है खुशबू से हर इक दश्तो–चमन[3] आज
गुंचों[4] को सबा तोड़ गयी कुफ्ले–दहन[5] आज
है हर गुले–ख़न्दाँ[6] की ज़बाँ पर यह सुख़न[7] आज
सद शुक्र कि टूटा दरे– ज़िन्दान–ए–मिहन[8] आज

फिर मौज ने डूबी हुई कश्ती को उभारा
बिगड़ी हुई तकदीर को हिम्मत ने सँवारा
खोई हुई अज़मत वह मिली हमको दुबारा
रौशन है फिर आज़ादि–ए–मशरिक़[9] का सितारा
यह ख़ुशख़बरी लाती है सूरज की किरन आज

रुख़ासत है शबे–तार गुलामी का अंधेरा
वह सामने है सुब्हे–सआदत का सवेरा
भारत से विदेशी का उखड़ने लगा ड़ेरा
लहराये न क्यों अज़मते–क़ौमी[10] का फरेरा
आज़ाद हुआ कैंदे–ए–गुलामी से वतन आज

1– सजावट 2– डूबा हुआ 3– उपवन 4– कली 5– मुँह का ताला 6– हँसता हुआ फूल 7– बातचीत 8– कष्ट के जेलख़ाने का दरवाज़ा 9– मशरिक़ की आज़ादी 10– क़ौम की बड़ाई

आफ़्ताबे–ताज़ा[1]

जन्म – 1914 ई0
मृत्यु – 1983 ई0

सिकन्दर अली वज्द

दामाने–चाक[2] अश्के–मसर्रत[3] से तर है आज
दो सै बरस के बाद तुलूए– सहर[4] है आज

शमा–ए–यक़ीं[5] के दम से शिकस्तों[6] की शब[7] कटी
महरे–मुबी[8] पयम्बरे– फत्हो– ज़फर[9] है आज

सामाने–सद हज़ार बहारां लिए हुए
अपनी जिलू में गर्दिशे– शम्सो–क़मर[10] है आज

मुर्दा दिलों मे दौड़ गया खून–ए–ज़िन्दगी
चेहरों पे हुर्रियत[11] की शफक[12] जल्वागर है आज

पानी की बूँद क़तर–ए–आबे–हयात है
मौजे– हवा में मरहम–ए–ज़ख़्मे जिगर है आज

गुलचीं के साथ दौर–ए–तही दामनी[13] गया
हर शाख़े–गुल से बारिशे–लालो–गुहर है आज

गुलशन का इंक़िलाब ने नक्शा बदल दिया
शाहीं[14] शिकारे–बुलबुले बे बाला–ओ–पर है आज

उड़ती हैं गर्दे–राह[15] की मानिन्द मंज़िलें
बेबाक रख्ते–उम्र[16] जो गर्मे–सफ़र है आज

1– नया सूरज 2– फटा हुआ दामन 3– खुशी के आँसू 4– सुबह होना 5– विश्वास का चराग़ 6– हार 7– रात 8– प्रकाशमान सूरज 9– विजय 10– सूरज, चाँद 11– आज़ादी 12– सूर्य की लाली 13– खाली दामन 14– बाज़ पंक्षी 15– राह की धूल 16– उम्र का घोड़ा

बशारत

जन्म – 1914 ई0
मृत्यु – 1983 ई0

सिकन्दर अली वज्द

चेहरे पे बिखर जायेंगे अनवार[1] –ए– तबस्सुम[2]
पेशानी[3] –ए– गीती[4] की शिकन[5] गुल न रहेगी

खुल जायेगी सब पर दरे मैख़ान[6] –ए– इशरत[7]
इफरात–ए–ग़म–व–रंज–व–मेहन[8] कल न रहेगी

यह दुश्मने इंसाफ –व– करम, जुल्म की देवी
बेकस का लहू पी के मगन कल न रहेगी

अरबाब –ए– हुनर[9] शाद[10] –व– सरअफ़राज़[11] रहेंगे
यह सरकशी[12] –ए– दार–व–रसन[13] कल न रहेगी

1– नूर, प्रकाश 2– मुस्कुराहट 3– माथा 4– ज़मीन 5–सिकुड़न 6–शराबखाना 7–आराम 8– ग़म, दुख 9–हुनरमन्द लोग 10– खुश 11– कामयाब 12– बग़ावत 13– फाँसी, सूली (लकड़ी व रस्सी)

अहल–ए–हिन्द

महाराज बहादुर बर्क देहलवी

जन्म – 1884 ई0
मृत्यु – 1936 ई0

इंकलाब –ए– दहर[1] से सब शान वाले मिट गए
रोम वाले मिट गए यूनान वाले मिट गए
सीरिया वाले मिटे तूरान वाले मिट गए
कौन कहता है कि हिन्दोस्तान वाले मिट गए

नक़्श –ए– बातिल हम नहीं जिसको मिटाए आसमां
हम नहीं मिटने के जब तक है बिना[2] –ए– आसमां

खाक से इस देश के पैदा हुए वह नामवर
नक़्श[3] जिनके कारनामे हैं बिसात –ए–दहर पर
दबदबे से जिनके झुकते थे सर अफ़राज़ों के सर
जिनका लोहा मानते हैं हुक्मरान –ए– बहर –व–बर[5]

तेग़[6] –व– तरकश के धनी थे रज़्म गह[7] में फर्द थे
इस शुजाअ़त[8] पर ये तुर्रा है सरापा दर्द थे

क्या थे अहल –ए– हिन्द ये चर्ख़[9] –ए– कुहन से पूछ लो
या हिमालय की गुफाओं[10] के दहन से पूछ लो
अपना अफ़साना लबे गंग–व–जमन से पूछ लो
पूछ लो हर ज़र्रा –ए– ख़ाक –ए– चमन से पूछ लो

अपने मुंह से क्या बताएं हम कि क्या वो लोग थे
नफ्स कश नेकी के पुतले थे मुजस्सम[11] योग थे

1– दुनिया 2– बुनियाद 3–निशान 4–महानता महान 5– सागर व सूखी ज़मीन अर्थात पूरी दुनिया 6– तलवार 7– लड़ाई का मैदान 8– बहादुरी 9–आसमान 10– मुंह 11– पूरी तरह ठोस जिस्म

गुल्ज़ार–ए–वतन

जन्म – 1873 ई0
मृत्यु – 1910 ई0

दुर्गा सहाय सुरूर जहांनाबादी

फूलों का कुंज[1] दिलकश[2] भारत में इक बनायें
हुब्बे वतन के पौधे इस में नये लगायें
इक एक गुल में फूंके रुह–ए–शमीम–ए–वहदत[3]
इक इक कली को दिल के दामन से दें हवाएं
मुग़ार्गान –ए– बाग़ बन कर उड़ते फिरें हवा में
नग़मे हों रुह अफ्ज़ा और दिल रुबा[4] सदाएं

छाई हुई घटा हो मौसम तरब[5] फ़ज़ा हो
झोंके चले हवा के अशजार[6] लहलहायें

इस कुंज दिल नशीं में कब्जा न हो रिवज़ाँ[7] का
जो हो गुलों का तख़्ता तख़्ता हो इक जिनाँ[8] का
बुलबुल को हो चमन में सय्याद का न खटका
खुश खुश हो शाख़े[9] गुल पर गम हो न आशियाँ का
मौसम हो जोश–ए–गुल का और दिन बहार के हों
आलम अजीब दिलकश हो अपने गुलसितां[10] का

मिल मिल के हम तराने हुब्बे वतन[11] के गायें
बुलबुल हैं जिस चमन के , गीत उस चमन के गायें

1– झुण्ड 2– दिल को भाने वाला 3– बेमिसाल खुशबू, महक लुभाने वाली 4–दिल लुभाने वाली 5–खुशी बढ़ाने वाली 6 –बहुत से पेड़ 7– पतझड़ 8– जन्नत 9– टहनी 10–बाग़ 11–देश प्रेम

जल्वा–ए–दरबार–ए–देहली

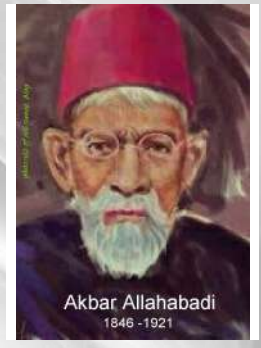

जन्म – 1846 ई0
मृत्यु – 1921 ई0

अकबर इलाहाबादी (चन्द अशआर)

हम तो उनके ख़ैर – तलब[1] हैं
हम क्या ऐसे ही सब के सब हैं
उन के राज के उम्दा ढ़ब हैं
सब सामान–ए–ऐश–ओ–तरब[2] हैं

एग्ज़ीबीशन की शान अनेखी
हर शय[3] उम्दा हर शय चोखी
अक़्लीदस[4] की नापी जोखी
मन भर सोने की लागत सोखी

जश्न–ए–अज़ीम[5]–इस साल हुआ है
शाही फोर्ट मे बाल हुआ है
रौनक़ हर इक हॉल हुआ है
किस्सा –ए– माज़ी[6] हाल हुआ है

हॉल में चमकीं आ के यकायक
ज़र्रीं[7], थी पोशाक[8] झका झक
महक थी उन की औज–ए–समां[9] तक
चर्ख़[10] पे ज़ोहरा[11] उन की थी गाहक

1– भलाई चाहने वाला 2– आराम खुशी 3–चीज़ 4– गणित का ज्ञान 5– महोत्सव 6– भूतकाल, गुजरा हुआ 7–सुनहरी 8– कपड़ा, वस्त्र 9– आसमान तक ऊँचा 10– आसमान 11–सात सितारों का झूमर

कोराना अंग्रेज़ परस्ती

अकबर इलाहाबादी

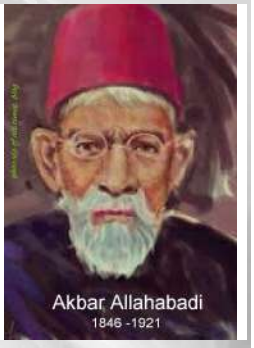

जन्म – 1846 ई0
मृत्यु – 1921 ई0

रहा वो जरगह[1] जिसे चर गयी है अंग्रेज़ी
सो वाँ खुदा की ज़रुरत न अंबिया[2] दरकार
वो आँख मींच के बर खुद गलत बने ऐसे
कि एशिया की हर इक चीज़ पर पड़ी धुत्कार
जो पोशिशों[3] में है पोशिश तो पसन्दीदा[4] कोट
सवारियों में सवारी तो दुम कटा रहवार[5]
जो अर्दली में है कुत्ता तो हाथ में इक बेद
बजाते जाते हैं सीटी सुलग रहा है सिगार
वो अपने आप को समझे हुये हैं जेंटलमैन
और अपनी क़ौम के लोगो को जानते हैं गंवार
न कुछ अदब है न अख़्लाक़ नै खुदा तरसी[6]
गये हैं उनके खयालात अब समुंदर पार
वो अपने ज़ोम[7] में लिबरल हैं या रीडीकल है
मगर हैं क़ौम के हक़ में ब सूरत –ए– अग़्यार[9]
न इंडिया में रहे वो न वो बने इंग्लिश
न उनको चर्च में ऑनर न मस्जिदों में बार
न कोई इल्म न सनअत[10] न कुछ हुनर न कमाल
तमाम क़ौम के सर पर सवार है अदबार[11]

1– गिरोह, जत्था 2–नबी, देवता 3–वस्त्र 4– पीछे से फटा हुआ 5– धोड़ा 6– रहम दिली, ईशवर से डरना 7– अभिमान 8– आज़ाद ख़याल 9– ग़ैर, अजनबी 10– कारीगरी 11– बदनसीब

''वतन का राग''

अकबर इलाहाबादी

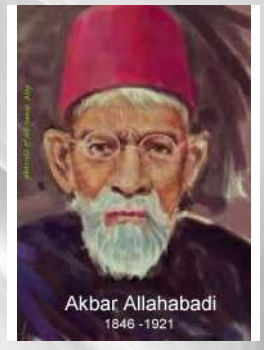

जन्म – 1846 ई0
मृत्यु – 1921 ई0

भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है
हर रुत हर इक मौसम इस का कितना प्यारा प्यारा है
कैसा सुहाना कैसा सुन्दर प्यारा देस हमारा है
दुख में सुख में हर हालत में भारत दिल का सहारा है
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है

मज़हब कुछ हो हिन्दी हैं हम सारे भाई भाई हैं
हिन्दू हैं या मुस्लिम हैं या सिख हैं या ईसाई हैं
प्रेम ने सब को एक किया है प्रेम के हम शैदाई[1] हैं
भारत नाम के आशिक़ हैं हम भारत के सौदाई[2] हैं
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है

1– चाहने वाले 2–दीवाने

तराना–ए–हिन्दी

डाक्टर सर मुहम्मद इक़बाल

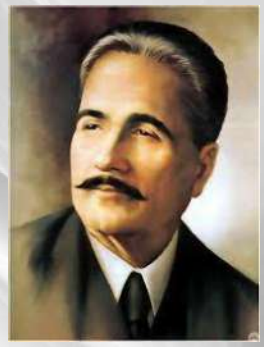

जन्म – 1877 ई0
मृत्यु – 1938 ई0

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलसिताँ[1] हमारा

परवत है सबसे ऊँचा, हम्साया आसमाँ का
वह संतरी[2] हमारा, वह पासबाँ हमारा

गोदी में खेलती हैं इसकी हजारों नदियाँ
गुल्शन[3] है जिनके दम से रश्क–ए–जिनाँ[4] हमारा

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर–ए–ज़माँ[5] हमारा

1–बाग़ 2– पहरेदार 3–बाग़ 4– जन्नत 5– ज़माना

शोआ–ए–उम्मीद

जन्म – 1877 ई0
मृत्यु – 1938 ई0

डाक्टर सर मुहम्मद इक़बाल

एक शोख किरन[1] शोख मिसाले निगह–ए–हूर
आराम से फ़ारिग़ सिफत–ए–जौहर–ए–सीमाब[2]
बोली कि मुझे रुखसते तनवीर[3] अता हो
जब तक न हो मशरिक़[4] का हर इक ज़र्रह जहां ताब[5]
छोड़ूँगी न मैं हिन्द की तारीक[6] फ़ज़ा[7] को
जब तक न उठें ख्वाब से मर्दान–ए–गिराँ[8] ख़्वाब[9]
ख़ावर[10] की उम्मीदों का यही ख़ाक है मरकज़[11]
इक़बाल के अश्कों[12] से यही खाक है सैराब[13]
चश्म[14]–ए–मह[15]–ओ–परवीं[16] है इसी खाक से रौशन
ये ख़ाक कि है जिस का खज़फ रेज़ह[17] दुरेनाब[18]
इस खाक से उठे हैं वह ग़व्वास–ए–मआनी[19]
जिन के लिए हर बहर[20]–ए–पुरआशूब[21] है पायाब[22]
जिस साज़[23] के नग़मों से हरारत थी दिलों में
महफिल का वही साज़ है बे गान–ए–मिज़राब[24]
बुतख़ाने के दरवाज़े पे सोता है ब्राहमन
तक़दीर को रोता है मुसलमाँ तह–ए–मेहराब[25]
मशरिक़ से हो बेज़ार[26] न मग़रिब से हज़र[27] कर
फितरत का इशारह है कि हर शब[28] को सहर[29] कर

1– किरण 2– मरकरी, पारा 3– रोशनी प्रकाश 4– पूरब 5– दुनिया को प्रकाशित करने वाला, रौशन करने वाला (सूरज, चाँद इत्यादि) 6– अंधेरा 7– माहौल, ज़मीन व आसमान के मध्य की खाली जगह 8–मर्द, पुरष 9– ख़्वाब में डूबे हुए, 10– सूरज, पूरब पश्चिम 11– केन्द्र बिन्दु 12 –आँसू 13– फूला फला, उपजाऊ, पानी से भरा होना 14– आँख 15– चाँद 16– सात सितारों का झुरमुट 17– पत्थर, खजूर की गुठली 18– चमकदार 19–उच्चकोटि के साहित्यकार ऊँचे विचार वाले व्यक्ति, ग़ोता ख़ोर 20– समन्दर 21– आफत भरा, फितना पसाद 22– कम गहरा 23– संगीत के सामान 24–साज बजाने का छल्ला 25– मेहराब के नीचे, क़यामनुमा ऊँची जगह 26– उकताना 27– ठहरना, सफर न करना 28–रात 29– सुबह

नया शिवाला[1]

जन्म – 1877 ई0
मृत्यु – 1938 ई0

डाक्टर सर मुहम्मद इक़बाल

सच कह दूँ ऐ बरहमन गर तू बुरा न माने
तेरे सनम–कदों के बुत हो गए पुराने
अपनों से बैर रखना तू ने बुतों से सीखा
जंग–ओ–जदल सिखाया वाइज़[2] को भी ख़ुदा ने
तंग आ के मैंने ने आखिर दैर[3]–ओ–हरम[4] को छोड़ा
वाइज़ का वाज़[5] छोड़ा छोड़े तेरे फ़साने
पत्थर की मूरतों में समझा है तू ख़ुदा है
ख़ाक–ए–वतन[6] का मुझ को हर ज़र्रा देवता है
आ ग़ैरियत[7] के पर्दे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें नक्श –ए– दुई[8] मिटा दें
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ इक नया शिवाला इस देश में बना दें
दुनिया के तीरथों से ऊँचा हो अपना तीरथ
दामान–ए–आसमाँ से इस का कलस[9] मिला दें
हर सुब्ह उठ के गाएँ मंतर वो मीठे मीठे
सारे पुजारियों को मय[10] प्रीत[11] की पिला दें
शक्ति भी शंति भी भगतों के गीत में है
धरती के बासियों की मुक्ति,[12] प्रीत में है

1–मंदिर 2–शिक्षक, धर्म पर भाषण देने वाला, नसीहत करने वाला, 3–मन्दिर 4–काबा, पवित्र जगह, इस्लामिक केंद्र 5–धार्मिक लेक्चर 6–देश की मिट्टी 7– अजनबीपन 8–दो समझना अलग समझने वाला, दृष्टिकोण 9– गुम्बद 10– शराब 11– प्रेम, प्यार ।2–आज़ादी, छुटकारा

शिकस्ते ज़िन्दाँ का ख्वाब

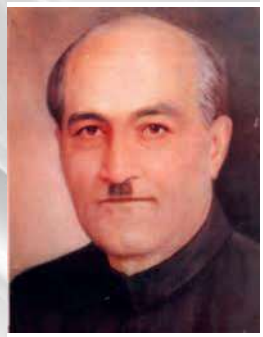

जन्म – 1898 ई0
मृत्यु – 1982 ई0

शब्बीर ह़सन ख़ान ''जोश'' मलीहाबादी

क्या हिन्द का ज़िन्दाँ[1] कांप रहा है गूंज रही हैं तकबीरें
उक्ताए हैं शायद कुछ क़ैदी और तोड़ रहे हैं ज़नजीरे

दीवारों के नीचे आ आ कर यूँ जमा हुए हैं ज़िन्दानी[2]
सीनों में तलातुम[3] बिजली का आंखों में झलकती शमशीरें[4]

भूकों की नज़र में बिजली है तोपों के दहाने ठण्डे हैं
तक़दीर के लब को जुम्बिश[5] है दम तोड़ रही हैं तदबीरें

आंखों में गदा की सुर्ख़ी है बेनूर है चेहरा सुल्तां का
तख़रीब[6] ने परचम[7] खोला है सजदे में पड़ी हैं तामीरें[8]

क्या उनको ख़बर थी ज़ेर–ओ–ज़बर[9] रखते थे जो रुहे मिल्लत को
उबलेंगे ज़मीं से मार–ए–सियह[10] बरसेंगी फ़लक[11] से शमशीरें

क्या उनको खबर थी सीनों से जो खून चुराया करते थे
इक रोज़ इसी बेरंगी से झलकेंगी हज़ारो तस्वीरें

क्या उनको ख़बर थी, होंठो पर जो कुफ्ल[12] लगाया करते थे
इक रोज़ इसी खामोशी से टपकेंगी दहकती तक़रीरें

सम्भलों कि वह जिन्दाँ गूंज उठा, झपटो कि वह क़ैदी छूट गये
उठो कि वह बैठी दीवारें, दौड़ो कि वह टूटी ज़नजीरे

1– क़ैदखाना, कारागार 2– क़ैदी 3– तूफान 4–तलवारें 5– हिलना डुलना 6– तबाही, उजाड़ना 7– झण्डा 8– घर इमारत 9– उलट पलट 10– 11– आसमान 12– ताला

वतन

जन्म – 1898 ई0
मृत्यु – 1982 ई0

जोश मलीहाबादी

ऐ वतन, पाक वतन रुह–ए–रवान–ए–एहरार[1]
ऐ कि ज़र्रों में तेरे बू–ए–चमन रंग–ए–बहार
ऐ कि ख़्वाबीदा[2] तेरी ख़ाक में शाहाना वक़ार[3]
ऐ कि हर ख़ार[4] तेरा रुकश[5]–ए–सद रु–ए–निगार[6]

रेज़े अल्मास[7] के तेरे ख़स[8]–ओ– ख़ाशाक[9] में हैं
हड्डियाँ अपने बुजुर्गों की तेरी ख़ाक में है।

पायी गुन्चों[10] में तेरे रंग की दुनिया हमने
तेरे काँटों से लिया दर्स–ए–तमन्ना हमने
तेरे क़तरों से सुनी क़िरात–ए–दरिया हमने
तेरे ज़र्रों में पढ़ी आयत–ए–सहरा हमने

क्या बतायें कि तेरी बज़्म में क्या क्या देखा
एक एक आसू में दुनिया का तमाशा देखा

पहले जिस चीज़ को देखा, वो फ़ज़ा तेरी थी
पहले जो कान में आई वो सदा तेरी थी
पालना जिसने हिलाया वो हवा तेरी थी
जिसने गहवारे[11] में चूमा वो सबा[12] तेरी थी

[13]अव्वलीं रक़्स[14] हुआ मस्त घटा में तेरी
भीगी है अपनी मसें[15] आब–ओ–हवा में तेरी

1–आजाद लोग 2– सोया हुआ 3–बड़प्पन, भारी भरकम कद्र वाला 4– कांटा 5– मुकाबला ,दुश्मन 6– मूरत, सुन्दर मोहने वाला 7– हीरा 8,9–धास फूस, कूड़ा करकट 10– कली 11–झूला 12– हवा 13– प्रथमबार 14– नाचना 15–रोयें, त्वचा के बाल

जश्ने –ए– आज़ादी

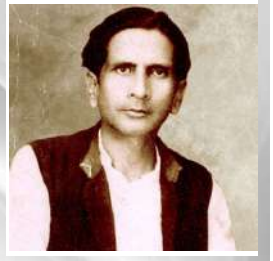

जन्म – 1911 ई0
मृत्यु – 1955 ई0

असरारुल–ह़क़ ''मजाज़''

बसद[1] गुरुर बसद फ़ख़्रो–नाज़–ए–आज़ादी[2]
मचल के खुल गयी जुल्फ–ए–दराज़े–ए–आज़ादी[3]
महो–नजूम[4] है नग्मा तराज़–ए–आज़ादी[5]
वतन ने छेड़ा है इस तरह साज़–ए–आज़ादी
ज़माना रक़्स[7] में है, ज़िन्दगी ग़ज़लख़्वाँ है

हर इक जबीं[8] पे है इक मौज–ए–नूर–ए–आज़ादी[9]
हर एक आस में कैफो–ओ–सूरुर–ए–आज़ादी[10]
गुलामी ख़ाक बसर[11] है हुजूर–ए–आज़ादी[12]
हर एक क़स्र[13] है इक बामे तूर–ए–आज़ादी[14]
हर एक बाम पे इक परचमे ज़र अफ़शाँ[15] है

हर एक सिम्त निगाराने यासमीं पैकर[16]
निकल पड़े हैं दर–ओ–बाम से मह–ओ–अख़्तर[17]
वह सैले–नूर[18] है ख़ीरा[19] है आदमी की नज़र
बसद गुरुरो अदा ख़न्दाज़न[20] है गरदूँ[21] पर
ज़मीने– हिन्द की जौलागहे–गज़ाला[22] है

1– सैंकड़ों 2– आज़ादी का गर्व 3– आज़ादी की लम्बी लटें 4– चाँद तारे 5– आज़ादी के गीत गाते हुए 6– आज़ादी का वाद्य 7– नृत्य 8– माथा 9– आज़ादी के प्रवाह की मौज 10– आज़ादी का नशा 11–धूलधुसरित 12– आज़ादी को चरणों में 13– महल 14– आज़ादी के तूर की छत 15– सोना बिखेरता हुआ 16– चमेली जैसे आकार की मूर्तियाँ 17– चाँद सितारे 18– प्रकाश की बाड़ 19– चकाचौंध 20– मुस्कुराता हुआ 21– आकाश 22– हिरनों के दौड़ने का मैदान

सदा दो अंजुम–ए– अफ्लाक[23] रक़्स फरमायें
बुताने– काफिर–ओ– सफ्फाक[24] रक़्स फरमायें
शरीके– हल्क–ए–इदराक[25] रक़्स फरमायें
तरब[26] का वक़्त है, बेबाक रक़्स फरमायें
अब ऐसे में कि तकाजाए–बज़्म–रिन्दाँ[27] है

यह इंकिलाब का मुज्दा है इंक़िलाब नहीं
यह आफ़्ताब का परतौ है, आफ़्ताब नहीं
वह जिसकी ताबो– तवानाई का जवाब नहीं
अभी वह सई –ए– जुनूँखेज़ कामयाब नहीं
यह इंतिहा नहीं आवाज़े – कारे – मर्दां है

23– आकाश के तारे 24– बातिल और काफिर 25– ज्ञान, गोष्ठी के शरीक 26– आनन्द
27– मदिरा पीने वालों की बज़्म का तक़ाज़ा 28– खुशख़बरी

इंक़ेलाब[1]

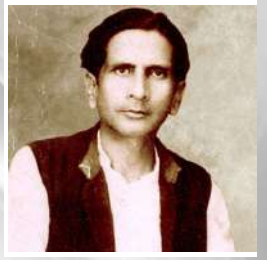

जन्म – 1911 ई0
मृत्यु – 1955 ई0

असरारुल हक़ 'मजाज़'

छोड़ दे मुतरिब[2] बस अब लिल्लाह पीछा छोड़ दे
काम का ये वक़्त है कुछ काम करने दे मुझे
तेरी तानों में है ज़ालिम किस क़यामत का असर
बिजलियाँ सी गिर रही हैं ख़िरमन –ए– इदराक[3] में
ये ख़याल आता है रह रह कर दिल –ए– बेताब में
बह न जाऊँ फिर तेरे नग़मात[4] के सैलाब[5] में
छोड़ कर आया हूँ किस मुश्किल से मैं जाम–ओ–सुबू![6]
आह किस दिल से किया है मैने ख़ून –ए– आरज़ू
फिर शबिस्तान –ए– तरब[7] की राह दिखलाता है तू
मुझ को करना चाहता है फिर ख़राब –ए– रंग –ओ–बू
मैने माना वज्द[8] में दुनिया को ला सकता है तू
मैंने माना तेरी मौसीक़ी[9] है इतनी पुर असर
झूम उठते हैं फ़रिश्ते तक तेरे नग़मात पर
हाँ ये सच है ज़मज़मे[10] तेरे मचाते हैं वो धूम
झूम जाते हैं मनाज़िर[11] रक़्स[12] करते है नजूम[13]
तेरे ही नग़मे से वाबिस्ता[14] निशात –ए– ज़िन्दगी[15]
तेरे ही नग़मे से कैफ़ –ओ– इन्बिसात–ए–ज़िन्दगी[16]

1– क्रान्ति 2– गाने वाल, क़व्वाल 3– अक़्ल 4– गीत 5– बाढ़ 6– शराब के बर्तन, सुराही, प्याला इत्यादि 7– ख़ुशी 8– झूमना 9– संगीत 10– गीत, तराना, सुरीली आवाज़ 11– दृश्य 12– नाचना 13– सितारे 14– जुड़ना 15– खुशी की ज़िन्दगी 16– खुशी की ज़िन्दगी 17– आवाज़, इलाही

तेरी सौत–ए–सरमदी[17] बाग़–ए–तसव्वुफ़[18] की बहार
तेरे ही नग़मों से बेख़ुद आबिदे शब ज़िन्दादार[19]
बुलबुलें नग़मा सरा हैं तेरी ही तक़लीद[20] में
तेरे ही नग़मों से झूमें महाफ़िल –ए– नाहीद[21] में
मुझ को तेरे सहर –ए– मौसीक़ी से कब इन्कार है
मुझ को तेरे लहन –ए– दाऊदी से कब इन्कार है
बज़्म हस्ती का मगर क्या रंग है ये भी तो देख
हर ज़बाँ पर अब सला –ए– जंग[23] है ये भी तो देख
फ़र्श –ए– गीती[24] से सुकूँ अब मायल–ए–परवाज़[25] है
अब्र[26] के पर्दों में साज़ –ए– जंग की आवाज़ है
फेंक दे ऐ दोस्त अब भी फ़ेक दे अपना रबाब[27]
उठने ही वाला है कोई दम में शोर –ए– इंक़ेलाब

18– सूफ़ी ख़याल 19– रात को जागकर प्रर्थना करने वाले 20– नक़ल 21– सितारा 22– दाउद पैगम्बर की संगीतमय आवाज़ प्रसिद्ध थी, आकर्षित करने वाली आवाज़ 23– आहवान करना, दावत–ए–आम (जंग की) 24– ज़मीन 25– उड़ना 26– बादल 27– बाजा

आवारा

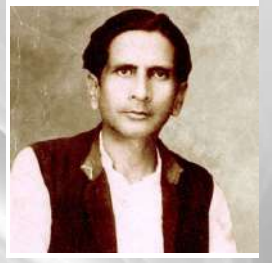

जन्म – 1911 ई0
मृत्यु – 1955 ई0

असरारुल हक़ 'मजाज़'

शहर की रात और मैं नाशाद[1] –ओ– नाकारा फिरुँ
जगमगाती जागती सड़कों पे आवारा फिरुँ
ग़ैर की बस्ती में कब तक दर –ब– दर मारा फिरुँ
ऐ ग़म – ए– दिल[2] क्या करुँ, ऐ वहशत –ए–दिल[3] क्या करुँ

इक महल की आड़ से निकला वो पीला माहताब[4]
जैसे मुल्ला का अमामा जैसे बनिये की किताब
जैसे मुफ़लिस की जवानी, जैसे बेवा का शबाब[5]
ऐ ग़म – ए– दिल क्या करुँ, ऐ वहशत –ए–दिल क्या करुँ

जी में आता है ये मुर्दा चाँद तारे नोच लूँ
इस किनारे नोच लूँ और उस किनारे नोच लूँ
एक दो का जिक्र क्या सारे के सारे नोच लूँ
ऐ ग़म – ए– दिल क्या करुँ, ऐ वहशत –ए–दिल क्या करुँ

मुफ़लिसी और ये मज़ाहिर[6] हैं नज़र के सामने
सैकड़ों सुल्तान –ओ–जाबिर[7] हैं नज़र के सामने
सैकड़ों चंगेज़ – ओ– नादिर हैं नज़र के सामने
ऐ ग़म – ए– दिल क्या करुँ, ऐ वहशत –ए–दिल क्या करुँ

ले के इक चंगेज़ के हाथों से खंजर[8] तोड़ दूँ
ताज पर उसके दमकता है जो पत्थर तोड़ दूँ
कोई तोड़े या न तोड़े मैं ही बढ़ कर तोड़ दूँ
ऐ ग़म – ए– दिल क्या करुँ, ऐ वहशत –ए–दिल क्या करुँ

1– अप्रसन्न 2– दिल का ग़म 3– घबराहट 4– चाँद 5– जवानी 6– दृश्य, नज़ारे 7– जुल्म करने वाला, ज़बरदस्ती करने वाल 8–तलवार

बोल! अरी ओ धरती बोल!

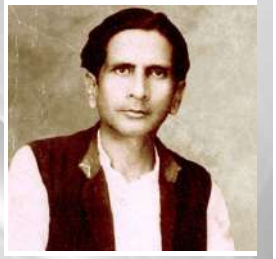

जन्म – 1911 ई0
मृत्यु – 1955 ई0

असरारुल हक़ 'मजाज़'

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

बादल बिजली रैन अंधियारी दुख की मारी प्रजा सारी
बूढ़े बच्चे सब दुखिया हैं दुखिया नर हैं दुखिया नारी
बस्ती बस्ती लूट मची है सब बनिये हैं सब व्यापारी

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

कलजुग में जग के रखवाले चाँदी वाले सोने वाले
देसी हों या परदेसी हों नीले पीले गोरे काले
मक्खी भुन्गे भिन भिन करते ढूँढ़े हैं मकड़ी के जाले

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

क्या अफरंगी क्या तातारी आँख बची और बर्छी मारी
कब तक जनता की बेचौनी कब तक जनता की बेज़ारी[1]
कब तक सरमाया[2] के धँधे कब तक ये सरमायादारी[3]

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

नामी और मशहूर नहीं हम लेकिन क्या मजदूर नहीं हम
धोखा और मज़दूरों को दें ऐसे तो मजबूर नहीं हम
मंज़िल अपने पाँव के नीचे मंज़िल से अब दूर नहीं हम

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

बोल कि तेरी खिदमत की है बोल कि तेरा काम किया है
बोल कि तेरे फल खाए हैं बोल कि तेरा दूध पिया है
बोल कि हमने हश्र[4] उठाया बोल कि हमसे हश्र उठा है
बोल कि हमसे जागी दुनिया
बोल कि हमसे जागी धरती

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

1– उक्ताहट 2– धन दौलत 3– धनी लोग 4– आफ़त, प्रलय हलचल

सुब्ह –ए– आज़ादी

जन्म – 1911 ई0
मृत्यु – 1984 ई0

फैज़ अहमद फ़ैज़

ये दाग़ दाग़ उजाला ये शब गुज़ीदह[1] सहर[2]
वह इन्तज़ार था जिस का ये वह सहर तो नहीं
ये वह सहर तो नहीं जिसकी आरज़ू लेकर
चले थे यार कि मिल जायेगी कहीं न कहीं
फलक के दश्त[3] में तारों की आखिरी मंज़िल
कहीं तो होगा शबे सुस्त मौज का साहिल[4]
कहीं तो जाके रुकेगा सफीना–ए– ग़म–ए–दिल[5]
जवां लहू की पुर असरार[6] शाहराहों[7] से
चले जो यार तो दामन पे कितने हाथ पड़े
दयारे हुस्न की बेसब्र ख़्वाब गाहों[8] से
पुकारती रहीं बाहें, बदन बुलाते रहे
बहुत अज़ीज थी लेकिन रुखे सहर की लगन
बहुत क़रीं[1] था हसीनाने नूर का दामन
सुबक सुबक थी तमन्ना दबी दबी थी थकन
सुना है हो भी चुका है फिराक़[10] जुल्मत[11]–ओ–नूर[12]
सुना है हो भी चुका है विसाले[13] मंज़िल ओ गाम[14]
बदल चुका है बहुत अहल–ए–दर्द का दस्तूर[15]
निशाते वस्ल[16] हलाल–ओ–अज़ाबे–ए–हिज्र हराम
जिगर की आग नज़र की उमंग दिल की जलन
किसी पे चारह–ए–हिजरां का कुछ असर ही नहीं
कहां से आई निगारे सबा, किधर को गयी
अभी चिराग़–ए–सरे रह[17] को कुछ ख़बर ही नहीं
अभी गिरानी –ए–शब[18] में कमी नहीं आई
नजात[19] दीदा–ओ–दिल की घड़ी नहीं आई
चले चलो कि वह मंजिल अभी नहीं आई

1–चुभने वाली रात 2– सुबह 3–जंगल 4–किनारा 5– ग़म भरे दिल की कश्ती 6– भेद 7– चौड़े रास्ते 8– सोने का कमरा 9– क़रीब 10– जुदाई 11–अंधेरा 12– रौशनी 13– मुलाक़ात 14– क़दम 15– रवाज 16–जुदाई 17– रास्ते का चराग़ 18– तकलीफ की रात 19–छुटकारा

हम जो तारीक राहों में मारे गये

जन्म – 1911 ई0
मृत्यु – 1984 ई0

फैज़ अहमद फ़ैज़

तेरे होंटो के फूलों की चाहत में हम
दार[1] की ख़ुश्क[2] टहनी पे वारे गाये
तेरे हाथो की शमाओं[3] की हसरत में हम
नीम तारीक[4] राहों में मारे गये
सूलियों पर हमारे लबों से परे
तेरे होंटो की लाली लपकती रही
तेरी जुल्फों की मस्ती बरसती रही
तेरे हाथों की चांदी दमकती रही
जब खुली तेरी राहों में शामे सितम
हम चले आये, लाये जहां तक क़दम
लब पे हरफे गज़ल दिल में क़न्दीले[5] ग़म
अपना गम था गवाही तेरे हुस्न की
देख क़ायम रहे इस गवाही पे हम
हम जो तारीक राहों में मारे गये
नारसाई[6] अगर अपनी तक़दीर थी
तेरी उल्फ़त[7] तो अपनी ही तदबीर थी
हिज्र[8] की कत्ल गाहों से सब जा मिले
कत्ल गाहों से चुन कर हमारे अलम
और निकलेंगे उश्शाक़[9] के क़ाफ़िले[10]
जिनकी राहे तलब से हमारे क़दम
मुख्तसर[11] कर चले दर्द के फ़ासले
कर चले जिन की ख़ातिर जहाँगीर[12] हम
हम जो तारीक राहों में मारे गये

1– सूली 2–सूखी 3–चराग़ 4– अंधेरा 5– शीशे का लैम्प, लालटेन शीशे का बर्तन जिसमे बत्ती जला देते हैं। 6– असफलता, नाकामी 7– मुहब्बत, प्रेम 8– जुदाई 9– प्रेमी 10– कारवाँ 11– संक्षेप 12– दुनिया को कब्ज़े में करना

एक सवाल

अख़्तरुल ईमान

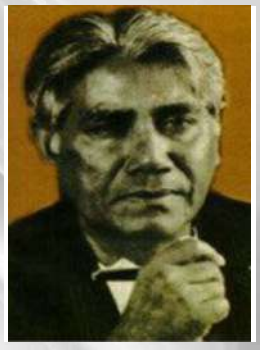

जन्म – 1915 ई0
मृत्यु – 1996 ई0

ज़मीं के तारीक[1] गहरे सीने में फेंक दो इसका जिस्मे–खाकी[2]
यह सीमगू नर्म नर्म किरनें
जो माहो–अंजुम[3] से फूटती है
यह नीलगू आस्मां की दुनिया
यह शर्क[4] और ग़र्ब[5] के किनारे
यह मेवाहाए लज़ीज़ो–शीरीं
यह हुस्ने बेनाम के इशारे[6]
कभी न इसको जगा सकेंग
जवान, दिलकश, हसीन चेहरे से छीन ली गम ने ताबनाकी[7]

1– अंधेरा, 2– मिट्टी का शरीर, 3– चाँद तारे 4– पूर्व, 5–पश्चिम 6– स्वादिष्ट 7–चमक

''जंग –ए– आज़ादी''

मख़दूम मोही उद्दीन

जन्म – 1908 ई0
मृत्यु – 1969 ई0

यह जंग है जंग –ए– आज़ादी
आज़ादी के परचम[1] के तले
हम हिन्द के रहने वालों की
महकूमों[2] की मजबूरों की
आज़ादी के मतवालों की
दहक़ानों[3] की मज़दूरों की
यह जंग है जंग –ए– आज़ादी
आज़ादी के परचम के तल
वह जंग ही क्या वह अमन ही क्या
दुश्मन जिस में ताराज[4] न हो
वह दुनिया दुनिया क्या होगी
जिस दुनिया मे स्वराज[5] न हो
वह आज़ादी आज़ादी क्या
मज़दूर का जिसमें राज न हो
यह जंग है जंग –ए– आज़ादी[6]
आज़ादी के परचम के तले

1– झण्डा 2– पूजा 3– किसानों 4– बर्बाद 5– आज़ाद, हुकूमत 6– आज़ादी की लड़ाई

''इन्तेक़ाम[1]''

जन्म – 1974 ई0
मृत्यु – 1992 ई0

गुलाम रब्बानी ताबाँ

मैं किस से इन्तेक़ाम लूँ?
यह सच है बेकसों के खून से सुर्ख़ हो गयी ज़मीं
मुसीबतों की दास्ताँ मैं सुन चुका हूँ हमनशीं
मैं सुन चुका हूँ किस तरह बुजुर्ग –व– नातवान भी
बिलकते शीर ख़्वार भी फसुरदा नौजवान भी
अज़ल के घाट एक एक करके सब उतर गये
घरों की शाहज़ादियाँ हरीम –ए– नाज़ की मकीं
जो इफ़्फ़तें गँवा चुकीं जो अस्मतें लुटा चुकीं
भटक रही हैं दर–ब–दर बरहना पा बरहना सर
मैं सुन चुका हूँ हम नशीं दास्तान–ए–दिलखराश
मगर किसे मैं दोष दूँ मैं किससे इन्तेक़ाम लूँ
तबाहियों की गोद से पले हुए किसान से?
कि जंग–ए–इंकलाब के सिपाही नौजवान से ग़रीब–व–नातवान से
इन्हें नहीं यह सब मेरे अज़ीज़ हैं यह सब मुझे अज़ीज़ हैं
मैं किससे इन्तेक़ाम लूँ, बता किसे मैं दोष दूँ
चमन में किसने आग दी है मौसम –ए– बहार में
एक अजनबी सफेद हाथ आतिश और शोला बार
फ़ज़ा–ए–तीर–ए–वतन में रक़्स कर रहा है आज।

1– बदला 2– बेबस, मजबूर 3– दोस्त, साथ बैठने वाला 4– कमज़ोर 5– दूध पीता बच्चा 6– उदास 7– मौत 8– महबूब का घर या दोस्त का घर 9– मकान 10– इज़्ज़त 11– इज़्ज़त 12– नन्गापन 13– पैर 14– दिल चीरने वाला, दर्दनाक

एशिया जाग उठा

अली सरदार जाफ़री

जन्म – 1913 ई0
मृत्यु – 2000 ई0

एशिया की ख़ाक पर दम तोड़ता है सामराज[1]
एशिया की ठोकरों में है मलूकियत[2] का ताज
एशिया में एशिया का जश्न–ए–आज़ादी है आज
एशिया के ख़ून में है सुबह मशरिक़[3] का रचाव
एशिया से भाग जाओ

अब से होगा एशिया पर एशिया वालों का राज
दस्त–ए–मेहनत को मिलेगा दस्त–ए–मेहनत का ख़िराज[4]
ज़िन्दगी बदली है बदला है ज़माने का मिज़ाज
फोड़ देंगे हम यह आँखें हम को मत आँखें दिखाओ
एशिया से भाग जाओ

लुट गये वह दिन कि जब आक़ा थे तुम और हम गुलाम
हम वह बेहिस थे कि तुम को झुक के करते थे सलाम
सेर का बदला है सेर और पाव का बदला है पाव
एशिया से भाग जाओ

हम भी देंगे तुम को अब जूते से जूते का जवाब
हाँ बड़े आये कहीं के लाट साहब जाओ जाओ
एशिया से भाग जाओ

1– शहंशाहियत 2– बादशाहत 3– पूरब 4– श्रद्धान्जलि

इरतेक़ा[1] और इंक़ेलाब

जन्म – 1913 ई0
मृत्यु – 2000 ई0

अली सरदार जाफ़री

रक़्स[2] कर ऐ रुह –ए– आज़ादी कि रक़्साँ[3] है हयात
घूमती है वक़्त के महवर[4] पे सारी कायनात[5]

उड़ रहा है जुल्म –व– इस्तेबदाद[6] के चेहरे से रंग
छट रहा है वक़्त की तलवार के माथे से जंग

हिल चुका है तख़्त शाही गिर चला है सर से ताज
हर क़दम पर डगमगाया जा रहा है साम्राज्य

ढ़ल रही है ज़रगिरी[7] की रात के तारों की छाँव
मुफ़लिसी[8] फैला रही है वक़्त की चादर में पाँव

1– तरक़्की 2– नाच 3– नाचना 4– धुरी 5–दुनिया 6–जुल्म 7–जाल, फरेब धोखाधड़ी 8– ग़रीबी

यह हिन्दोस्ताँ

अली सरदार जाफ़री

जन्म – 1913 ई0
मृत्यु – 2000 ई0

यह हिन्दोस्ताँ रश्के़ खुल्द –ए– बरीं[1]
उगलती है सोना वतन की ज़मीं
कहीं कोयले और लोहे की कान[2]
कहीं सुर्ख़ पत्थर की उँची चटान
कहीं संग मरमर की शफ़्फ़ाफ[3] सिल[4]
फिसलता है जिसकी सफाई पे दिल
बहुत से ख़ाज़ीने[5] हैं इस ख़ाक[6] में
हज़ारों दफ़ीने[7] हैं इस खाक में
गुलो, लाल –ओ– यासमीं[8] के अयाग़[9]
महकते हुये आम के सब्ज़ बाग़
हरे और भरे जंगलों की बहार
झलाझल चमकते हुये रेग ज़ार[10]
ये सूरज की रंगीन किरनों का जाल
कि जिस तरह फ़ितरत ने खोले हों बाल
उफ़ुक़[11] से उबलता हुआ रंग –ओ– नूर
फज़ाओं में परवाज़ करते तयूर[12]
ये नीलम और अलमास[13] के कोहसार[14]
ये चांदी के पिघले हुये आबशार[15]
ये गंगा का आँचल ये जमुना की रेत
ये धान और गेहूँ के शादाब[16] खेत
मगर ये खाज़ाने हमारे नहीं
हमारे नहीं हैं तुम्हारे नहीं

1– स्वर्ग भी जिस पर गर्व करे 2–खान 3–साफ 4– पत्थर 5– ख़ज़ाना 6– मिट्टी 7– दफ़्न किए हुए 8– लाला व चमेली के फूल 9– प्याला 10– रेगिस्तान 11– आसमान का किनारा जो जमीन से मिला दिखाई देता है 12– पंक्षी (बहुत से)

मेरे आज़ाद वतन

क़ाज़ी सलीम

जन्म – 1930 ई0
मृत्यु – 2005 ई0

मेरे आज़ाद वतन मेरी उम्मीदों के चमन[1]
तू मेरा ख़्वाब है और ख़्वाब की ताबीर[2] भी है
आज ऐ जाने जहाँ तूने पुकारा है मुझे
तेरी आवाज़ में जादू भी है तासीर भी है
तेरी ललकार पे सब फर्क़ मिटे एक हुए
यह सियह रात नयी सुबह की तनवीर[3] भी है
हो मुबारक तुझे मन्ज़िल का तसव्वुर[4] तो मिला
वह तसव्वुर जो चराग–ए– रहे–तामीर[5] भी है
सर उठाया है जो बातिल[6] ने हमेशा की तरह
हक़परसती में वही कूव्वते – तसख़ीर[7] भी है
हम वह दिल वाले हैं करते हैं जो ताज़ीम–ए–वफ़ा[8]
दोस्ती जिनके लिए दोस्त की तौक़ीर[9] भी है
जिसने तोड़े हैं मुहब्बत की शरीअत[10] के उसूल
वह गुनहगार भी हैं क़ाबिल–ए–ताज़ीर[11] भी है
इस ख़ताकार[12] से कह दो कि अगर वक़्त पड़े
बासुरी कृष्ण की अर्जुन का कड़ा तीर भी है

1– बाग़ 2– ख्वाब (सपना) की व्याख्या 3– प्रकाश 4– कल्पना 5– निर्माण मार्ग का चराग़ 6– झूठ 7– जीतना 8– साथ देना 9– इज़्ज़त 10– क़ानून 11– दण्ड देने योग्य 12– गुनहगार

दौलते–सीमीं[1]

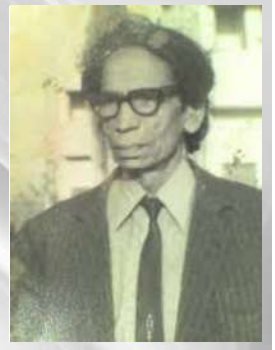

जन्म – 1913 ई0
मृत्यु – 1975 ई0

शमीम किरहनी

नज़र नज़र को मुबारक हो यह अज़ीम सहर
जो जुल्मतों[2] के क़फ़स[3] से गुजर के आई है
किरन किरन पे है मुहरे–तबस्सुमे–अबदी[4]
कि मक़्तले[5]–शोहदा से निकल के आई है
सियाह ख़ान–ए–जम्हूरे–वक़्त[6] की क़न्दील
फराज़े–दारो–रसन[7] से उतर के आई है

सहर के नाम से दिल जिसको याद करता है
वह जामे–सुर्ख है रिन्दाने–तिश्ना लब[8] के लिए
बराए–चेहरा–ए–आलम[9] है बोस–ए–इख़्लास[10]
जो हर्फे–नर्म है बीमारे नीमशब[11] के लिए

1– चाँदी की दौलत 2– अंधेरा 3– पिंजरा 4– अनन्तकाल की मुसकुराहट की मौत 5– बधस्थल 6– वक़्त के जम्हूर का घेरा, घर 7– फाँसी की रस्सी की ऊँचाई 8– प्यासे लब 9– संसार के चेहरे के लिए 10– निष्ठा का चुम्बन 11– आधी रात का

जवान जज़्बे

शमीम किरहानी

जन्म – 1913 ई0
मृत्यु – 1975 ई0

यह जुल्म शहंशाही जिस वक़्त मिटा देंगे
सोती हुई दुनिया की क़िस्मत को जगा देंगे

इफ़्लास[1] के सीने से शोले जो लपकते हैं
महलों में अमीरों के वह आग लगा देंगे

हैं आज बग़ावत पर तैयार जवाँ जज़्बे[2]
जल्लाद हुकूमत की बुनियाद हिला देंगे

यूँ फूल खिलायेंगे टपका के लहू अपना
ग़ुरबत के बयाबाँ[3] को गुलज़ार[4] बना देंगे

हम परचम–ए–क़ौमी को लहरा के हिमालय पर
दुश्मन की हुकूमत के झण्डे को झुका देंगे

जो आड़ में मज़हब के हंगामा करें बरपा
हम ऐसे फसादी को गंगा में बहा देंगे

सर जाये कि जाँ जाये ऐ मादर–ए–हिन्द[5] इक दिन
ज़िल्लत से गुलामी की हम तुझको छुड़ा देंगे

किस तरह संवरता है सर देने से मुस्तक़बिल[6]
ग़ैरों को बता देंगे अपनों का सिखा देंगे

1– ग़रीबी 2– भावनाएं 3– वीराना, जंगल 4– बाग 5– भारत माता 6– भविष्य

रौशन अंधेरा

शमीम किरहानी

जन्म – 1913 ई0
मृत्यु – 1975 ई0

था ज़बानों पे ये नारा आशियाँ[1] को छोड़ दो
छोड़ दो ऐ ग़ासिबो[2] हिन्दोस्ताँ को छोड़ दो
इस सदा ने चोट पहुंचायी सितम के नाज़ पर
छा गयीं तोपें गरज कर दर्द की आवाज़ पर
मौत का परचम फ़ज़ा[3] के दोश[4] पर लहरा गया
ज़िन्दगी के सहन[5] में ग़म का अंधेरा छा गया
इस अंधेरे में घरों की रौशनी लूटी गई
मौत ने खुशियाँ मनायी जिंदगी लूटी गई
था वतन आफ़त में यारान –ए– चमन देखा किये
आशियां लुटता रहा, अहल –ए– चमन देखा किये
बेख़बर कहते थे ग़म की ताब क्या लाओगे तुम
आग वह दहकी है जल कर ख़ाक[6] हो जाओगे तुम
उनसे कह दो बात वह जिन की हवा मे खो गई
तप के सोना बन गये हम आग ठण्डी हो गई

1– धोंसला 2– लुटेरों 3– माहौल, खुला मैदान, बहार 4– कांधा 5– आंगन, अहाता 6– मिट्टी

यौम–ए–आज़ादी[1]

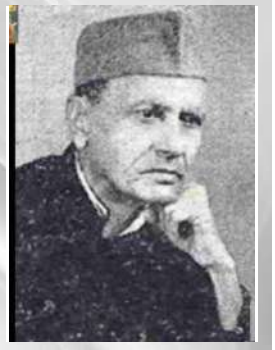

जन्म – 1894 ई0
मृत्यु – 1968 ई0

सिराज लखनवी

जमीन–ए–हिन्द है और आसमान–ए–आज़ादी
यक़ीन बन गया अब तो गुमान–ए–आज़ादी
सुनो बुलन्द हुई फिर अज़ान–ए–आज़ादी
सरे– नियाज़[2] है और आस्तान–ए–आज़ादी[3]

पहाड़ फट गया और नूरे–सहर[4] से रात मिली
ख़ुदा का शुक्र गुलामी से तो नजात[5] मिली

हवाए–ऐशो–तरब[6] बादबान बन के चली
ज़मी वतन की नया आसमान बन के चली
नसीमे– सुबह[7] फिर अर्जुन का बान बन के चली
बहारे–हिन्द तिरंगा निशान बन के चली

1– आज़ादी का दिन 2– श्रद्धापूर्ण ललाट 3– आज़ादी की चौखट 4– प्रातः काल का प्रकाश 5– मुक्ति 6– सुख और ऐशवर्य की हवा 7– प्रातः समीर

बादा –ए– वतन

जाँनिसार अख्तर

जन्म – 1914 ई0
मृत्यु – 1976 ई0

पिला साक़िया। बादा–ए–ख़ाना साज़
कि हिन्दोस्ताँ पर रहे हम को नाज़

मुहब्बत है खाके वतन से हमें
मुहब्बत है अपने चमन से हमें

हमें अपनी सुब्हों से शामों से प्यार
हमें अपने शहरों के नामों से प्यार

हमें प्यार अपने हर इक गाँव से
धने बरगदों की धनी छाँव से

हमे प्यार अपनी इमारात से
हमें प्यार अपनी रिवायात से

हमें प्यार है अपनी तमईज़ से
हमें प्यार है अपनी हर चीज़ से

उठाये जो कोई नज़र क्या मजाल
तेरे रिन्द लें बढ़के आँखे निकाल

1– शराब पिलाने वाला 2–घर की बनी शराब 3–संस्कार, रस्म –ओ– रिवाज 4– सलीक़ा 5– शराबी, बेदीन

वतन

जन्म – 1901 ई0
मृत्यु – 1952 ई0

निहाल सेवहारवी

सुरुर[1]–ए–दीदा–ओ–दिल आलमे दयार–ए–वतन
हज़ार ख़ुल्द[2] दर आग़ोश[3] है बहार–ए–वतन

वतन का जब लबे शायर पे नाम होता है
तो इक हदीसे मुहब्बत कलाम होता है

फ़ज़ाए दिल से वफाओं के राग उठते हैं
तमाम इश्क के जज़्बात जाग उठते हैं

अगर जहाँ में मज़ाके हयात पस्त नहीं
वो आदमी ही नहीं जो वतन परस्त[4] नहीं

वतन की सर –ओ– समन[5] की अदाऐं क्या कहना
बतन के बाग़ वतन की हवाऐं क्या कहना

हर एक हुस्न सरापा अरे मआज़ अल्लाह
वतन के चश्मा –ओ– दरिया[7] अरे मआज़ अल्लाह[6]

वतन का रुप है हर ऐक ला कलाम अज़ीज़
वतन की सुब्ह है दिलकश[8] वतन की शाम अज़ीज़

अज़ीज़ अपने वतन की हैं चाँदनी रातें
पसन्द अपने चमन की हैं चादनी राते

1– नशा 2–स्वर्ग 3–देश को चाहना, 4– देश का वफ़ादार 5– मोरपंखी, चमेली 6– अल्लाह की पनाह 7– पानी का सोता, दरिया 8– दिल को भाने वाला 9– प्यारा

ऐ वतन

जन्म – 1906 ई0
मृत्यु – 1993 ई0

गोपाल मित्तल

सलाम हो तेरी गलियों पे ऐ वतन के जहाँ[1]
ये रस्म आम है, जो चाहे सर उठा के चले
कोई भी शर्त बजुज़ वज़ –ए– एहतियात नहीं
कोई संभल के चले कोई लड़खडा के चले

सलाम हो तेरी गलियो पे ऐ वतन के जहाँ
मेरे जुनून की पादाश संग –ओ– खिश्त नहीं
जहाँ पे दाना –ए– गन्दुम नहीं है वजहे अताब
ज़हे नसीब मयस्सर है वो बेहिश्त –ए– बरीं

सलाम हो तेरी गलियों पे जो कुशादा रहें
हमेशा मेरे लिये कल्ब –ए– दोस्ताँ की तरह
मैं एक सरकश –ओ– आवारा था मगर तूने
हमेशा बख़्श दिया है शफ़ीक माँ की तरह

सलाम तेरी हवा को तेरी फ़ज़ा को सलाम
हैं जिनका दीन मेरा ज़ौक –ए– शेरो नग़मा गरी
खुलूस –ए– दिल से दुआ है रहे कयामत तक
मसर्रतों के सितारों से तेरी माँग भरी

1– सिवाय 2– बनावट 3– सँभलना 4– बदला 5– पत्थर 6– ईंट 7– गेहूँ 8– सज़ा, गुस्सा9– भाग्यवान 10– मिलना 11– जन्नत, स्वर्ग 12– फैली हुई, खुला हुआ 13– दोस्त का दिल 14– बाग़ी 15– दयावान

समुद्र पार के फ़रिश्ता हाय रहमत से

अहमद नदीम क़ासमी

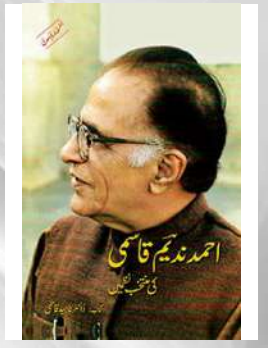

जन्म – 1916 ई0
मृत्यु – 2006 ई0

न जाने कब से यह तिफ़लाना[1] खेल जारी है
तुम्हारी ''उक़्दा कुशाई''[2] हमारी महरुमी[3]
मज़ाक़ पर उतर आती है जब शहंशाही
तो अपने आप को पहचानती है महरूमी

तुम्हारे ज़हन की यह मूशगाफियाँ[4] ही तो हैं
कि हुरियत[5] की ख़रीद–व–फ़रोख़्त[6] है दुश्वार
ख़िज़ाँ[7] के बाद यक़ीनन बहार आती है
नहीं है आदत–ए–फितरत को मसलहत दरकार

मुअर्रिख़ों[8] से कहो ख़ून में डुबोयें क़लम
बदल चुका है इरादे में इज़्तेराब[9] अपना
ख़िज़ा रहे कि बहार आये हर चे बाद आबाद
अब इक ज़क़न्द[10] का हो मुन्तज़िर[11] शबाब अपना[12]

1– बचकाना 2– गाँठ खोलना अर्थात मुश्किल दूर करना 3–उम्मीद ना होना 4– बाल की खाल निकालने वाला 5– आज़ादी 6– बेचना 7– पतझड़ 8– इतिहासकार 9– बेचैनी 10– कूद फाँद, उड़ना 11– इन्तेज़ार 12– जवानी

नया सूरज

मोईन एहसन जज़्बी

जन्म – 1912 ई0
मृत्यु – 2005 ई0

बड़े नाज़ से आज उभरा है सूरज
हिमालय के उँचे कलस[1] जगमगाये
क़दम चूमने बर्क़[2]–व–बाद[3] आब[4]–व–आतिश[5]
बसद शौक़[6] दौड़े बसद इज्ज़[7] आये
मगर बर्क़–व–आतिश के साये में ऐ दिल
ये सदियों के ख़ुद रफ्तह[8] नाशाद[9] तायर[10]
ये सदियों के पर बस्तह[11] बर्बाद तायर
ये हैं आज भी मुज़्महिल[12] दिल गिरफ्तह[13]
ये हैं आज भी अपने सर को छिपाये

1– धोंसला 2– लुटेरों 3– माहौल, खुला मैदान, बहार 4– कांधा 5– आंगन, अहाता 6– मिट्टी

ऐ शरीफ़ इंसानों

जन्म – 1921 ई0
मृत्यु – 1980 ई0

साहिर लुधियानवी

ख़ून अपना हो या पराया हो
नस्ल–ए–आदम[1] का ख़ून है आख़िर
जंग मशरिक़[2] में हो कि मग़रिब[3] में
अमन –ए– आलम[4] का ख़ून है आखिर

बम घरों पर गिरें कि सरहद पर
रुह –ए– तामीर ज़ख्म खाती है
खेत आपने जलें कि औरों के
ज़ीस्त[7] फाक़ों[8] से तिलमिलाती है

टैंक आगे बढ़ें कि पीछे हटें
कोख धरती की बांझ होती है
फतेह का जश्न[10] हो या हार का सोग[11]
ज़िन्दगी मय्यतों[12] पे रोती है

जंग तो खुद ही एक मसला[5] है
जंग क्या मसलों का हल देगी
आग और ख़ून आज बख़्शेगी
भूख और ऐहतियाज[6] कल देगी

इसलिए ऐ शरीफ इंसानों।
जंग टलती रहे तो बेहतर है
आप और हम सभी के आँगन में
शमा जलती रहे तो बेहतर है

1– आदमी की नस्ल, आदम की औलाद 2– पूरब 3– पश्चिम 4– दुनिया की शांति 5– उलझन, मामला 6– मोहताजी 7– ज़िन्दगी 8– भूखा रहना, उपवास 9– जीत 10– खुशी 11– ग़म, दुख 12– मुरदा 13– रौशनी, दिया

नग़्मा–ए–वतन

एजाज़ सिद्दीक़ी

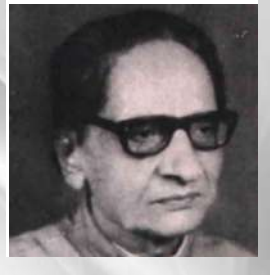

जन्म – 1911 ई0
मृत्यु – 1978 ई0

ऐ वतन, मेरे वतन, अच्छे वतन, प्यारे वतन
मुस्कुराती तेरी नदियां, गुनगुनाते आबशार
लहलहाते खेत तेरे, निकहत आगीं लाला ज़ार
हर तरफ इक कैफ़–ओ–मस्ती, हर तरफ रंग–ए–ख़ुमार
गुंचे गुंचे पर जवानी, पत्ते–पत्ते पर निखार
तेरी अर्ज़–ए–हुस्न पर फ़ितरत के लाखों शाहकार
ज़र्रे– ज़र्रे से तेरे कैफ–ए–अज़ल है जलवा बार
तू है मयख़ाना मेरा और मैं हूँ तेरा मयगुसार
तुझ पे कुर्बां मेरी हस्ती, तुझ पे जान–ओ–दिल निसार
ऐ वतन, मेरे वतन, अच्छे वतन, प्यारे वतन
तेरी मिट्टी से हुआ रूहानियत का इर्तिक़ा
तू कि इक तहज़ीब का सदियों से गहवारा रहा
दिलकुशा तेरी हवा, तेरे मनाज़िर जाँ फ़िज़ा
मुख़्तलिफ़ रंगों में भी यकरंग है तेरी अदा
आग तेरी दौलत–ए–दिल, ख़ाक तेरी कीमिया
तुझ से अफ़ज़ल तर नहीं है कोई शय तेरे सिवा
तेरे दीवानों का कम होगा न अब दीवाना पन
ऐ वतन, ऐ वतन, अच्छे वतन, प्यारे वतन

तरान–ए–आज़ादी

सागर निज़ामी

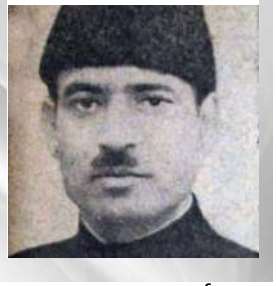

जन्म – 1905 ई0
मृत्यु – 1983 ई0

ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन
जाने मन, जाने मन जाने मन

ज़र्रे ज़र्रे में महफ़िल सजा देंगे हम
तेरे दीवार–ओ–दर जगमगा देंगे हम
तुझ को हस्ती का गुलाम बना देंगे हम
आस्मानों पे तुझ को बिठा देंगे हम

बन के दुश्मन तेरा जो उठेगा यहाँ
उस को तहत–उस–सरा में गिरा देंगे हम

और तहत–उस–सरा को फ़ना के समुद्र मे
अर्थी बना कर बहा देंगे हम

ऐ वतन ! ऐ वतन !!
सुन ले यह इंस–ओ–जान–ओ–ज़मीन–ओ–ज़मन
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन
जाने मन, जाने मन जाने मन

नया साज़ नया अंदाज़

नाज़िश प्रतापगढ़ी

जन्म – 1924 ई0
मृत्यु – 1981 ई0

ऐ होश बाश ऐ ज़बान–ए–ख़ामा है आज़माईश मेरे सोख़न की
लबो की हर जुंबिश–ए–ख़फी पर लगी है आंख अहल–ए–अंजुमन की
हर एक तसबीह निकले कि लाज रह जाये फिक्र–ओ–फन की
हर एक मिस्रे के आईने में हसीन तस्वीर हो वतन की

इक एक हर्फ़ आयें नज़र लेकर ख़ज़ाना ल़ज़ों की वुसअतों का
कि मेरी तब–ए–रवाँ ने छेड़ा है ज़िक्र भारत की अज़मतों का
मिलेगा बुद्ध के पैयाम–ए–हक़ में वही सुकून–ए–ह़यात अब भी
गया के ज़र्रे दिखा रहे हैं जहाँ को राह–ए–निजात अब भी
अजोध्या की फ़ज़ाओं में है वफ़ा–ए–सीता की बात अब भी
मुसीबतों के घनेरे जंगल राम–ओ–लक्ष्मण हैं सात अब भी

कुरेदें माज़ी की राख़ इसमें शऊ़र का जाम–ए–जम मिलेगा
इन्हीं रवायात के ख़ज़ाने से हम को जोऱ–ए–क़लम मिलेगा
वही अदायें हें गोपियों की तो कृश्ण की बांसुरी वही है
वफ़ा–ए–शाहजहाँ ने की थी जो मरमरीं शायर वही हैं
हज़ार लुट कर भी अपनी धरती पे जलवा–ए–ज़िंदगी वही है
फटा है पंजाब का कलेजा मगर लबों पर हंसी वही है

इन्हीं में मौज़ू–ए–नज़्म ढूंढें यहीं पे मीनार–ए–अदब है
ज़मीन ही मर्क़ज़–ए–सुख़न है, वतन ही गहवार–ए–अदब है

हदीस–ए–वतन

अल्लामा तैश सिद्दीक़ी

जन्म – 1927 ई0
मृत्यु – 2015 ई0

मेरा वतन मेरा वतन हयात–ओ–कायनात–ए–मन

मेरे वतन की सर ज़मीन जमील–ओ–दिलकश–ओ–हसीं
मेरे वतन का आस्मां अज़ीम–ओ–अज़्म आफ़रीं
ये पुर खुलूस बस्तियाँ फला–ओ–ख़ैर की अमीं
सुकूं पसन्द–ओ–सुलह जू बुलन्द ज़र्फ़–ओ–पाक बीं
यह ज़र फ़रोष खेतियां सितारा खेज़–ओ–खुर जबीं
शगूफ़ा बार–ओ–गुल चकाँ नज़र नवाज़–ओ–नाज़नीन
रवाँ दवाँ है चार सू फ़ज़ा में रूह–ए–अंगबीं
मज़ाक–ए–दीद चाहिए तजल्लियाँ कहाँ नहीं

मेरा वतन मेरा वतन हयात–ओ–कायनात–ए–मन

मिटा मिटा सा है षब–ए–सियाह का हर इक समाँ

लड़ी लड़ी सी हैं अजल की कूवतों की धज्जियाँ
उफ़क उफ़क हैं मरीम–ए–सहर की दिल सतानियाँ
जहाँ जहाँ है ज़िंदगी की दिलबरी की दास्ताँ
जफ़ा कषी–ओ–तन दही की मारफ़त हैं खेतियाँ
खुलूस कार की गवाह हैं मिलों की चिमनियाँ
उछल रहे हैं देवता मचल रही हैं देवियाँ
उबल रहे हैं जुमरे महक रही हैं मस्तियाँ

मेरा वतन मेरा वतन हयात–ओ–कायनात–ए–मन

ऐ धरती मग़रूर न होना, दे कर लाला–व–गुल की भीख
हमने तुझको सौंपा दिये हैं कैसे प्यारे–प्यारे लोग

धन्यवाद